5800

एयांगा माफ ताईञ में

(मां मुझे माफ कर दो)

मुण्डारी-हिन्दी कहानी संग्रह

मंगल सिंह मुण्डा

एयांगा माफ ताईञ में

(मां मुझे माफ कर दो)

मुण्डारी-हिन्दी कहानी संग्रह

लेखक

मंगल सिंह मुण्डा

झारखण्ड झरोखा, राँची

ISBN : 978-93-85595-11-0

प्रथम संस्करण : 2015

सर्वाधिकार © : लेखक

प्रकाशक : झारखण्ड झरोखा
दुकान न.– डी. जी. 03
न्यू बिल्डिंग, न्यू मार्केट,
रातू रोड, राँची, (झारखण्ड), पिन न. 834001
मो. 09973112040, 09471160792

वितरक : क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी
28, शॉपिंग सेन्टर, कर्मपूरा, न्यू दिल्ली–110 015
दूरभाष : (O) 25465978, 65903449 (R) : 28542847
E-mail : classicalpc@gmail.com

अजिल्द : 100.00
सजिल्द : 150.00

किसी भी प्रकार के कानूनी अथवा अन्य वाद-विवाद
के लिए प्रकाशक जिम्मेवार नहीं है।

Maa Mujhe Maph Kar Do

by Mangal Singh Munda

समर्पण

स्व. पिता राम मुण्डा

को समर्पित

बुगिन सानङ

माइनन मंगल सिंह मुण्डा मियद लुतुमा कन होड़ोगे। ओल हरिआओए काजी दाड़ी ओआ। हातु दो रंग रोंग। अपुतेओ मियद.ओल हरिआ, दुरङ हरिआ गेः ताइकेना। लुतुम दो राम मुण्डा। रोका गे दुरङ कोए बाइ जद ताई केना आद अकड़ा कोरे को दुरङ जद ताइकेना। रांग रोंग हातु लुतुम चिलका एनका गे हातु ओ रांका रोड़े बुरू चेतन रे मेनाः। ओल दो रेआ ओल रेआः सेड़ों दो बुरू पोंका तेगेः नमलाः ओल जुलुङ रेआः सेंड़ा दो सिदा तेगे ताई केना दंगड़ा परिआ तेगे नुकुरी तनेः ताईकेना मेनदो इमिन रेओ सोमए उड़ुङ केआते ओल कामीः कामी तन ताइकेना। नआः सोमते रे मुण्डा सामाज मंगल सिंह मुण्डा मियद ओल हरिआए उड़ुङ जाना। नुकुरी होका जानचि होयो दुदुगर लेका ओलेः एटेः केदा। बरिआ अपिआ लेका पुति को चापा काना। मियद चएला संदुआः जीबोन इसु सुगाड़ाए ओला कादा। एटागाः "महुवा का फूल" ओड़ोः नआओ किङ ओल तन गेआ। नआः मियद सेकेड़ा चपाओ ताना। "एयांगा माफ ताञ में"। नेआ कानि रे बरिआ कुलगिआ किङः मियद गे होन कोड़ा ताई केना हुकुम मना तिङ काजी अपायुम मजाए ताई कोना। मेनदो दुकुआते मरं जेतना बनोआ अचाकाते दुकु नम किआ आद एनातेगे बंगई उतर जाना। एन सोमएः काजी केदा एयांगा माफ तोञ में माने एंगा अपु किङ सुसार कए दड़ी जाना।

सेरेद रे पुटुड़ा कन सुकु – सेरेद रे पुटुड़ा कन सुकु रे आबु ताला रे चिलकन सनादोओ सिगिद को मेनाः एना को राः बरनिका काना अबु रेगेः रबङ दोड़ो को (आदिवासी) कोदो बेगर कामी ते काबु जोम ताना एटाः कोदो दाः लेका टाका पएसा को दुल जादा उली फूली, साज सिंगार मेनते ने रेआने काजिआ काना।

कुड़ि पेड़े : – कुड़ि पेड़ेः लुतुम कानि रे बरिआ कुलगिआ किङ मियद कुंकल लेलते कामि रेआः सेंड़ा किङ नम केदा। कोड़ा दो लंडिआ गे ताइकेना कुड़ि जनाओ कामि उदम राः गेः कोरोद कोरोद जइ ताईकेना मियद कुंकल अकिङाः दुवर जापाः पचिरि रे ओड़ाए बई जदा जनाओ मोचाते दसाए अउ लीचि ओड़ाए बइआ कुटुरी कुटुरीः बई केदा आद सोबेन कुटुरी रे बाबा चउलीः पेरेः केदा। कुड़ि इनिः लेलते कोड़ाए काजीआई ताना हिनीः कुंकल लेल लीमे चिलका ओड़ाए बइ केदा अमदो लंडिआ कामि दो कामाः जनाओ कामी नाला आद जोम चिमिन दिन नेका

सेसेना। ओते अड़ि लङ बइआ आद लङ किति बातीआ। तयोम तेदो कुड़िआ काजीः अयुम जाना लोयोङ को किङ बई केदा आद मजा लेका किङ कामी जोम ताना नेआ गे कुड़ि पेड़ेः को मेनेआ।

मेद लेपेल सुकु - मेद लेपेल सुकु रे बरिआ कुलगिआ किङाः मियद होन कुड़ि ताई केना। लेल लेपेल रे सुगाड़ा कामि उदम मजा लेका। बुगिन काजी अपायुम इनी, मियद इस्कुल रेः पढ़ाओ तन ताइर्ककन पढ़ाओ रेओ कुब जुलुङ एनाते हुड़िङ् दिन तयोम तेदो एन जपाः रे रेगे मियद सुसुन इतुन इस्कुलो एटेः जना एना रेओ लुतुमेः ओल रिकान जाना। तयोम तेदो पढ़ाओ बारोम आद सुसुन इतुन लगा चबाओ तने ताईकेना। मुसिङ दो एनका गे सुसुन ते लगा जाना आद सेकेड़ा गेः दुड्डुम जाना इस्कुल रे नम लेन घर काम दो कए बाई केदा। गपा तेरे कलास रे गुरू को कुलि जःइआ। लरते काजीः उदुब केदा सुसुन तेञ लगा जाना आद घर काम दो काञ पुरा केदा मेनते 'नेआ काजि अयुम केदचि गुरू को सजाई को ओमाः इआ जेटे रे इसुकोन को तिंगु रिका किआः दुड़िङ हेड़ा रेदो जाँए जाना आदे बाटि जाना एन लोंगे अस्पताल को इदी किआ अना दो डाकटर गे बङ कुआ एन लोओः दोए गोए जाना। ने लेकाते एंगा अपु किङाः मेद लेपेल सुकु चाबा जाना।

अपनाः हातु अपनाः दिशुम लेका सुकु बनोआः एटाः दिशुम रे। बोड़े बोड़े बंगला को मेनाः ओसार ओसार संडाका को मेनाः मजा मजा उयुन तुसिङा कन होड़ो को मेनाः कोआ मेनदो हातु दिशुम बुसुः गुयुः लेका सुकु बनोगा नेरे नेआ जागारा काना।

एयांगाः सोना काजी रे मियद ओड़ाः रे एंगा आपु किङ आद अपिआ होनका मेनाः कोआ। आपु दोए नुकुरी ताना एना ते माजा लेका को ताइन ताना सुकु सनङ अपुते चण्डुः पुरा जनचि मोद पुराः टाकाए पोटोमाउइआ आद एँगातेः ओमाइआ। एंगाते दो कए पढ़ाओआ कन ताईकेना मेनदो सेड़ान गेः ताईकेना। टाका तेला केचि हाड़का रेः दे केआ। सोबेन होनको मजा को पढ़ाओ तन ताईकेना। किसान हुड़िङ दिन तयोम तेदो रोगो नम किआः। इनिआः दसा लेल केदचि कुड़ि काजीआइ ताना मियद लेका होनको लङ जुड़ी ताकोआ अम मेनब रेगे कोड़ा दे मरेः मेन केदा आद मरं कोड़ा होन किङ जुड़ि किआः। हुड़िङ दिन तयोम तेगे हड़म बंगइ जाना इमिन रेओ सोबेन मजा लेका को ताईन तान ताईकेना।

मुसिङ होनते कोड़ा एंगाते मेतइ ताना एयंगा नामिन माजा लेकाबु ओल

पढ़ाओ जाना इमिन रेओ ने का पढ़ाओआ कन दोड़ो को ताला रे बु ताईन ताना अपुइञ जाः टाका कोए सारेः तद् रेदो शहर साहाःरे ओड़ाः बु किरिङ केआ आद मजा लेकाबु ताईना। एंगाते हे मरेः मेन केदा आद शहर रे ओड़ाः को किरिङ केदा जे ताई केन टाका कोते। हुड़िङ दिन दो मजा लेका को ताईन जाना तयोम तेदो हानारेआ किमिनेआ रे कापाजी एटेः जाना होन कोड़ोओ कुड़ि साआ गेः जमान तन ताईकेन। मुसिङ दो जोर नोः को कापाजी जानचि एंगाते आद बोकाते ते ताकिङ लोः जू आपे दो हातु तेगे रूड़ा पे नेआ दो अञाः ओड़ाः दङेः मेताको ताना। एनाते कचहरी रेको पता लाः दो सरते गे अएआः लुतुम बारी मेनाः। एनाते को रूड़ा जाना हातु तेगे। एंगाते होन किङे बुजाओ केः किङा नेका कामी बेन हेनका कामि बेन मेनते मोद बिता ओते रेगे कोड़ा होने चालु केदा कुड़ि होन हेड़ेद तुसाङ केदा आद माजा को ताइन जाना। दुडिङ दिन तयोम तेदो एंगाओ बंगई जाना। एंगातेआ काजी ते मजा किङ ताईन जाना नेआगे एयागाः सोना काजी दो।

प्यारी टुटी
जोजो टोली, खूँटी, झारखण्ड

अपनी बात

इस कहानी संग्रह में कुल सात कहानियाँ हैं - 'माँ मुझे माफ कर दो', 'चिथड़े में लिपटा सुख', 'नारी शक्ति', 'नयन सुख', 'पाँड़की', 'मेरा गाँव मेरा देश', माँ की अमृत वाणी। किताब लिखने की मेरी मंशा तो मुण्डारी है, क्योंकि ऐसा सुनने में आ रहा है कि क्षेत्रीय भाषा में किताबों की घोर कमी महसूस की जा रही है। फिर भी साथ-साथ उनका हिन्दी में अनुवाद किया गया है ताकि सभी भाषा-भाषी लोगों को पढ़ने-समझने में कोई असुविधा न हो। मैं समझता हूँ कि लिखना कोई आसान काम नहीं। पर कवि कथाकार लेखकों का दिल-दिमाग ही कुछ अलग सृजित है। उनमें कुछ कर गुजरने का तमन्ना रहता है, किसी मसले को ले कर मन में आत्ममंथन उत्पन होता है।

इसी दृष्टिकोण से मैं कहना चाहूँगा कि मुझे तो हमारे समाज में मसले ही मसले दिखाई देते हैं। जिधर जाता हूँ उधर मसला ही मसला दिखता है। हमारा मानव जीवन विभिन्न आयामों में बँटा होता है। प्रस्तुत सातों कहानियाँ भी उन आयामों में से कुछ के ऊपर आधारित हैं। अतः मुझे तो हमारा आदिवासी जीवन ही विभिन्न आयामों की कहानियों का 'प्लान्ट' लगता है। बस, उन पर कहानियाँ लिखने के लिये जरा-सी कल्पना की उड़ान-शक्ति होनी चाहिये। इस लिये ऐसी कहानियों को कागज पर उतारने में मुझे कोई विशेष कठिनाइयाँ पेश नहीं आतीं। इनमें कुछ तो अपनी आँखों देखा हाल पर ही आधारित हैं। 'माँ मुझे माफ कर दो' एक हृदयस्पर्शी आँखों देखा हाल पर आधारित है। यह पारिवारिक जीवन में पति-पत्नी के आपसी झगड़े से उत्पन हुई घटना है। ऐसे जीवन का बदरंग चित्र आप खुद हवड़ा, दिल्ली, मुम्बई के रेलवे स्टेशनों पर विचरण करते अनाथ बच्चे-बच्चियों के रूप में देख सकते हैं। ऐसी ही घटना लोबोः दाः गाँव में देखने-सुनने को मिली और उस पर कहानी लिख मारा। 'चिथड़े' में लिपटा सुख एक मौका परस्त अनपढ़ गरीब माँ का सत्कर्म को दर्शाती है। 'नारी शक्ति' में भी एक ग्रामीण पत्नी अपने, कामचोर, आलसी, पीयंकड़ पति को जीने की राह सिखाती है। 'नयन सुख' भी माँ की ममता से वंशीभूत है जो कि मन का भ्रम साबित होता है। 'पाँड़की' और 'मेरा गाँव मेरा देश' कहानियाँ ग्राम्य जीवन का ठेठ दर्शन-शास्त्र प्रस्तुत करती हैं। उधर, माँ की 'अमृतवाणी' एक सच्ची घटना पर आधारित है जो कि अपने कोलकाता प्रवास के

दौरान बंगाल के एक गाँव की घटना है जिसमें अपने ही कमाऊ बेटे के काले करतूत अपनी विधवा माँ, छोटी बहन और एक छोटा भाई को, दिवंगत पिता की गढ़ी कमाई से, शहर में खरीदी गई घर-जमीन से बेदखल करता है। बेटा अपनी नवविवाहित बीवी के साथ चमचमाते मकान में मस्ती छानता है।

बहरहाल, यह छोटी-सी पुस्तक केवल आदिवासी ही नहीं, समस्त मानव जीवन (क्योंकि मानव का विवेक एक-सा ही होता है) को प्रभावित करने में सक्षम साबित होगी, ऐसी मेरी आशा है।

अंत में, प्रख्यात, जुझारू लेखिका मेडम प्यारी टुटी के प्रति भी आभारी हूँ जिन्होंने निष्पक्ष अवलोकन कर पुस्तक के प्रासंगिकता को बढ़ाया है।

प्रकाशन परिवार 'झारखण्ड झरोखा राँची' को साधुवाद देता हूँ जिसने मेरे लेखकीय विचारों को गर्त में जाने से बचाते हुए प्रकाश में लाने का बीड़ा उठाया है।

मंगल सिंह मुण्डा

14.3.2015 तिरला, खूँटी

विषय सूची

1. एयांगा माफ ताईञ में (मां मुझे माफ कर दो) 10–20
2. सेरेद रे पुटुड़ा कान सुकु (चिथड़े में लिपटा सुख) 21–28
3. कुड़ी पेड़ेः (नारी शक्ति) 29–36
4. मेद लेपेल सुकु (नयन सुख) 37–44
5. पुतम (पांड़की) 45–50
6. आईञाः हातु आईञाः दिसुम (मेरा गांव मेरा देश) 51–56
7. एयांआः सोना काजि (मां की अमृतवाणी) 57–64

मुण्डारी

1. एयांगा माफ ताईञ में

ओह! चिमिन रासिकान मेद मुड़ा चाईंतर ओड़ोः सुगुमान होन ताई केना। होला स्कूल राः हाजिरी बही राः स्याही वो दो कोताः रोड़ोवा काना? राचा रे इनिः रोवा ताद दुबी तासदो नाः ताजा कान गेया। मेन्दो इनिः तिसिंग स्कूल रे गैर हाजिर मेनाः ईया, चिया चि नाः इनिः ने दुनिया तेः सेनोः चुकावा काना। हे भेगोमन आम आले जी होन कोआः नागेन गोनोए चिमिन माजा सुकु रासिका ओड़ोः सारतेयानेम बाई कुला काःलेया ओकोताः रेचि दुश्मनोगे सोंगेः बाईयोः ताना। मास्टर सुधीर महतो जब आले सानामंग रे नेकाय काकला केदा, तोबे आचका गे आले सोबेन कोआः होश गे ओटंग गिड़ि जाना।

अरे मास्टर साहब चिका जाना? – प्रो. अखौरी किटिल जाना।

प्रोफेसर साहब एना गे होबा जाना ओकोआ आईञ काजि लाः।

चानाः मदन...इनिः दो...इनि दो...महिला मण्डल रेन गोभकेयाईन ओड़ोः ओलोल निः सुप्रिया रानी आकादंदा जान लोः तेः काजि केदा।

हे मदन...नाः...दो...। मास्टर जी काजि को पूरा जाद लोःए काजियाईया।

ने फाँकी मारा होड़ो को ताला रे आईञाः नेया मेन्ते गे गनती मेनाः चि आईञाः आदिवासी कुटुंग हागा कोआः बिषय रे बारिया लाईन ओल केया तेईञ ओम बेड़ा को ताना।इनकुईञ उदुबा को ताना चि मियाद किसांड़ा होड़ो के जेटे कल-कल सोमय, टुंगरी हेचे चेड़े रे होडेः हेर तान रे चिनाः चिनाः जोमेया को लोआड़ी भन्डि लोः अगुवाई ताना। ओड़ोः सिउः होका जाना ते बुरू जानार कोराः गुमसुम होएवो रे चिलकन सुगड़ दुरंग कोते इनिः दुरंग बेड़ा जादा। ओड़ोः बिना पैसा राः चा-पकौड़ी को नामोः तान रे भला ओकोए काए जामा ना, हाँ? एना मेन्ते कुंडम साः राः दुआर तेईञ बोली हापे जाना।

...आर जब आले मदनः गोनोए काजि को ताला रे ले बोलो जाना तोबे दो तिसिंग राः गोप राः विषय गे बदली गिड़ि जाना। का रेदो नेया ते सिदा कोरे नेका गे फालतु सोमय बिताव लेकान जागार कोगे जागार बेड़ा जाद ताई केना। अर...अर.. .अर...का...का। आईञ जा आपे केईञ होसोड़ो बेड़ा जाद पेया। ओकोए ठोर

जादा गापा हुलंग को ने लेकान होपो सोड़ो जागार कोगे आबुआ नागेन जीबोन रे सुकु-रसिका आगु रे देगा निः लेका कामि रे हिजुगा। चिलका दो कागजो राः बा सोवन विषय रे बे-मतलब कापाजि-रेपेः, बॉलिउड रेन तोरो राजा कोआः नीला-खेला, जाका-कामा जुल तान होड़ोमो को, रिम्विल चुटि ओड़ाः कोआ ते कुड़िल हाड़ागुई राः मोरोम को नेकान...नेकान ओड़ोगे। हे, भले इनकु नानीयाः कान्ता तुकुई लेका पुन्डि होड़ो कोवाः दिसुमा ते मांगावा कान फिल्म को काने-काने को बाई रूड़ा केया ते दो-दो सौ करोड़ रेन मालिकि को बाईन। एना मेन्ते ने तोरो राजा-रानी आर 200 करोड़ टाका तेर गिड़ि जाद दिसुम रेन दंगड़ा-दंगिड़ि को गे आले साः ते खूब लेका जोहार नामोः का। नाः लेले पे तो, अमेरिका ह्युस्टन शहर रेन बाईबिल राः गढ रेगे माईकेल आस आर जैरी डेविड लुतुम बारिया दंगड़ा किंञ बोंगा-चोंगा को हरगिड़ि (नास्तिक चर्च) राः गिरजा ओड़ाः बाई किंग आचुआ कान। निमिन बारि गेदो का, नेया राः सेंगेल लंडन राः सन्डे एसेम्बली कोरेव तेबाः काना। ठीक काजि! नेया गेचा को मेताः जीवोन रे उबारेन आर बदला-बदली राः नावा उडु विचार...।

गाजा-इजरायल रे तिसिंग गापा मायोम राः अबीर तेः फागु को मानातिंग ताना। अंटर्टिका रे रतंग बुरू लिंगि गिड़ि ताना। जापान दिसुम चेतान रे सुनामी शनिग्रह दुबा काना। तोबे कोतेको जाना ने धोरोम-कोरोम दोकानदार कोआः होड़ो बोंगा को? धोरोम-कोरोम बोंगा बुरू देवी-देवता को बानचाव को चि, बागाड़ाव को, चि मोलोंग चटेः काजि कमि को? अपनाः होड़ो होन को काको बानचाव दड़िया कोरे दो चिलकान धोरोम-कोरोम? दुनिया नेया राः जवाब काए नाम दाड़िया ताना।

फाकाटियाबाजी सः राः एटाः कानी नेया चि आले दिसुम रेन 10 करोड़ आदिवासी को आर स्कूलीय होन को होएवो, दाः, सेंगल, सिरमा ओड़ो ओते को बानचाव राः ले जागार ताना, दिसुम बाई किनिः के आर्दाश राः ले जागर ताना, दारूसिंह कोरे सखी तोल राः ले जागार ताना। दाः दारू बिर को बानचाव राः ले जागार ताना ओकाआ कोते चि जीव जीवोन बानचावा काना। नेया मेन्तेव ने होड़ो को आईंञ को सुकुआईंञ ताना। मेन्दो सारते दो नेया गे तानाः। आर सारतेया कानाजि का तेन-दापालोःगा। होड़ो होन केयाद चेणे लेका काजि ओतोंग काए नामा। एना मेन्ते खूब सारते गे मेने राः कानाजि चि गापा हुलंग यदि कापाजि-कापाटाव कोते ने धोरोम-कोरोम किरिग-आकिरिग तान लोम्पेटिया बेपारी को काए हंदिड़ि केको रेदो दुनिया लेल दरोम कोआः गे ठोरेपे हाँ।

ने लोलो रे फिल्म चालावनिः चित बसु आयाः काजिगे ठीक मेन लेका अंदाज रे काजि नागेनेः सेंगरे बेड़ान ताना। तिसिंग जब मास्टर जीयाः मोचाते मदनाः दुकु जागार कोए आईउम लेद चि चुटटु केनेः जागार केदा, लेल लाः पेचि का! इपाए एपाए गे होड़ो को आले फिल्म रेन होड़ो कोको एरंग बेड़ा लेया। अरे हाले को, आले कोताः ते फिल्म राः कानी कोले आउ जादा, समाजेया तेगे दो! समाज रे जो होबा ताना एना कोगे चा ले उतराव जादा। गापा हुलंञ ने कानी रे फिल्मेईञ बाई लेरे दोपे काजिया चि साला बंगाली होन आबु केः होसोड़ो जाः बुआ। मार नि के दालिपे-थाबिड़ि पे...। आईञ-काजियापे ताना चि ने मदनः एंगा-आपु किंगः चलते गे ने दुकु होबा काना। यदि इनकिंग काकिञ आपड़ान्दिन जान रेदो होनांग मदन काए पैदा जाना चि का! आर ने दुकु का होबा जाना होनांग।

तो बे दो आपड़ादिन का ठीक कामि! बसुआः ने उल्टा-पल्टा काजि को आईउम केद चि आईञाः जीव गे आलय-बालय जाना।

हे आपे काजि जादा आपड़ान्दिन का ठीक कामि! का आईञ काजि जादा चि आबुआ दिसुम रेन कुंड़ी गति को कोड़ा को कारे काको ताई दाड़ियाः। हें...हें... हें...। चालू चाय ओम बाड़ा निः चाय-समोसा आऊ केयाते चालू जागारे होगोड़ो केदा। नाः दो आंड़ंदि-कोड़ान्दि राः जागार को ताला रे कुड़ी जाती को चिलका को हापे ना! चाय ओम नियाः हिरूई-दिरूई जागार को आईउम केद लोः गे सुप्रिया रानी ककला जादा - एई होन मोचा रे लागोम केया ते जागा रेमे। आम पैदाव रे आमाः आबा ताई केना चि का? जागारेम जागार जादा का? दे सेकेड़ा लोलो समोसा आर पिंड़ी राः तरकारी। खूब कुड़ी कोआः सेंणाम बाई ताना? आले के कोड़ा को बराबरीः लेल लेपे तो आर आडंदि-कोड़ान्दि बारा काईती काजि-कामि होबाव ताना चि का, लेले पे।

मेडम क्षेमा ताईञ में। पिडि राः जागारेईञ उदुब लेरे दो गंडागोल होबावगा। चानाः गोंड़ोणोल होबावगा?

हे मेडम। असली जागार दो नेया चि आईञाः हासु तान एयांग बुड़िया ओड़ाः रे गितिया काना। आईञाः आबा हुड़िंग दिन सिदा रे डारिया सिरमा दिसुम तेः इदि किया। एयांग काजियाईञ ताना बेटा जू हुड़िग पिंडि राः चटनी खियाव नोः ताईंग में। होटोः गा ते साकिड़ी हड़ागु रे हुड़िंग पेड़ेः नोः गे ठो रोः गा। होला ताः ते काटा ती को लागा जाः ईञां। एना मेन्ते मेडम मालिकियाः पिंडिग कुम्बुडु आउ लाः। मालिकी

इतु केरे नुकुरीया तेः उड़ुंग गिड़िञा, मेडम... । आईञ आमा काटा सुबारेईञ उईऊन ताना मेडम...मेडम. । आर सारते गे, इनिः मेडमाः काटा साब नागेनेः उंगुदेन ताना। अच्छा मारेईञ क्षमा केः माँ–मेडमाः जी रे जी हिजुः उड़ा जाना । आर हम्बल जी लोः तेः बुडुंग–बुडुंग जादा–हाय चाय काप रे समुदर हिजुः जाना!

लेकिन मुण्डा जी ।

प्रो. आखौरी आईञ साःए हेता जाद लोः आर सुप्रियाः काजि को कोटोंग जाद लोः काजि नागेनेः तेयारेन तान लेकाए लेलोः ताना। इनिः काजि को ओड़ोः आयार ते बढ़ाओ जाद लोःए काजि केदा–मुण्डाजी आमाः काजि कोरे हुड़िग लेका सारते काजि कोगे उकुआ काना । आईंञ... ।

मोने–मोने रेगे आईञः जी कुल बुलाव जाना, आह नेका चानाःईञ काजि लाः? गाड़ा बिर ओते कोराः जानाव सिरमा हिसाब–किताब दोदो आदिवासी कोड़ा होन नेका चानाःए काजि केदा चि मिसिपिपि, टेम्स आर शिनानो गाड़ा कोराः दाः नू जोम ताद होड़ो भला आईञाः काजि कोरे टेकाद जाना । नेया दो दिसुम राः आराया भाकुबाव लेकान चीज कोरे मेनाः लेकान काजि तानाः । आईञ ओड़ोः दुनुआड़ा ईञ कुलि काए किःया सर.सर..सर..? इनिः छँड़िन तान लोः आले केः काजियाले ताना।

आईउमेपे हाले सेंणा, ते पटाः कान होड़ो, आईंञ आईंञा प्रोफसरी सोमय रे लंडन अमेरिका, जापान, पेरिस, नेकान–नेकान जगह कोराः मोरोम इतु आउ तद होड़ो तानिः । एन कोरेन दंगिड़ि कुड़ी होन को आकोआः कोड़ाते ताको देवता लेका काको हिसाब जाः कोआ । मेन्दो हाड़ाम दिला राः टुन्डा डन्डाः होन होपोन कोदो को असराय तान गेया । एना मेन्ते पेरिस शहर राः मियाद बदनाम गली रे दो मरियम गे मरियम को पेरेया काना । जापान रे कुड़ी होन को होड़ोमो रे केमिकल होन होबाव दाः को पेरेः रिकान ताना... । एना मेन्ते आँड़दि कोडान्दि हुड़िग लेका हिसाब तेदो का ठीक लेका गेचा! आबु दिसुम रेव दो को काजिया, आँड़न्दि दो जी राः लड़डु, जोमे रेवम उडुः गोएवोगा काम गोमेरेवोम उडुःगोएवोगा ।

चाय ओम होम नाः जाकेद खुन्टा रेः टेंडेरा कान चि आलेया उल्टा–पल्टा जागार कोए आतेन तान ताई केना । आईञ साः हेता जाद लोःए लान्दा ताना चिलका दो गितिल राः दुबिला तासाद रे बोछोर राः सिदा दाः गामा टोआ काना । जाँ गे होबाव मार आईञ लेकान डोन्डो होड़ो ने चेतान रे ओलाकान लंडन, अमेरिका पेरिस कोराः जागार मियाद काई बुझाव जाना । एना मेन्ते आईञाः कुलि तेतांग तान जी मास्टर जी साः सेनोः हापे जाना । आईञ इतुनेन सानंग तान ताई केना चि आले हातु साः लेका

ते ने मदन लेकान होन को नेकान गोनोए कोआ ते चिलका ते को बानचाव दाडियावगा? मेन्दो इनियाः मोचाते उल्टी गंगा गाड़ा लिंगि तानेईंग लेन केद चिईञ आचंम्भित गिड़ि जाना।

इनिः मेन केदा – आईञाः विचार मेनाः चि गुरू कोआ असली गुरू कोदो आकोआः होन कोगे तान को। गुरू कोआः सेंणा को दो हाड़ाम–डुडुम जान दारू कोरे आकोआः सोमय कोरा सुड़ा संगेन, मोए बा जो को लेकान चीज को तानाः ओको कोरे चि नावा–नावा जागार इतुन लेल इतुन राः ठाँव का लेल नामोः गा। मेन्दो बुटुः ओमोन तान तासाद रूड़ाः दारू सिंह कोरे कोरे दो लेल इतुन राः पुराः गे होरा मेनाः। एन हुलांग मदनाः ओड़ाः सेन केन रे आईंञ एनका गेईंञ आटकर केदा। आईञाः ओड़ाः आयाः ओड़ाः होए केया तेगे सेनोगोआ। आर एना ते हुड़िग आयार मेना गा। जब आईं स्कूलेईञ सेनोगा दो मोसा–मोसा ओड़ाः रेगेः नामोः। ओको रेदो होरा कोरे नामोः। ओको रेदो मोसा तेगेलिंग सेनोः। आईंञा खाता–बही कोए जतरा इदि...। होम वर्क को काए नागाए...बिना मतलब काए गैर हाजिरेन...स्कूल राः राचा कोरे बा दारू को रोवा कोराः जागार बेड़ाए...होसोड़ो काए जागारा....धोखा रे काए उईउगा...याने हुड़िग मोचा मारांग जागार....हुपुडिंग ती मापारंग कामि...हुपुडिंग काटा मापारंग चाण्डंग...हुडिंग जी मापारंग आसराय...ओड़ोः चिकनाः चाई आबुके? हुड़िंग बु उडुःई का ने माजा लेकान गुरू होनः आबु चेला को का?

गुरू जीयाः ने दुकु पेरेः या कान कानी आईउम केया ते सोबेन फाकटिया बाज कोले हापे गिड़िन जाना। लंडन अमेरिका ते रूड़ा कान प्रोफेसर साहेबोए हापे गिड़िन जाना। ओलोन निः सुप्रिया रानीवगे होन–होपोन राः कुड़ी दुनिया रे आद जाना। फिल्म चालव निः चितबसु गुम सुमेः हापेया काना। एन लोः आईंञ गे हाम्बल जी ते कुछ आईउम सानंग तान हिसाब तेईञ कुलि काए किया। मास्टर साब, आमाः काजि कोदो खाटो गेया मगर खूब घाघाव लेका हासुआन गेया। नेका गे, आम एन सुगड़ा होन ताः ते ओड़ोः जाः जान सेंणा बुद्धि कोम इतु ताद रेदो हुड़िंग एना को गे उदुबा लेम, चियाः चि आले डोन्डो एंगा–आपु को आयार तेराः होरा ले इतु जोम का।

नेया जागार ले आईउम केद चि मास्टर साबाः कुड़ाम रे सेंगेल जुल जान लेका बाई जाना। नेका बारि गेदो का आईञ लेल किया चि इनियाः मेद दाःव पोरापुसी तान लेलोः ताना। इनिः काजि एटेः केदा –

...आर आले हुड़िंग लेका होन कोलोः होनाः हासा ओम मेन्ते हाथीरामः ओड़ा ले सेनोः जाना। ओड़ाः दुआर राचा कोईञ कोएवो बेड़ा जादा। राचा रे आयाः

ती तेगे रोवा कान उलि, लीची, कन्टाड़ा दारू होन को ना हारा-माताओ तान गेया। आकोअः गोमकेया हाल खबर को आते बेखर। दुआर सोजे रेगे हरि आर उड़हुल बा दारू किंग बोः देंदवोद केया ते किंग तिंगुआ काना। नेया आसा रे जाः बु मेन लेया चि नाः दो आलंगः मालिकि जोआ रे चोः लंगः आर स्कूलेः सेनोगा। मेन्दो तिसिंग इनिः स्कूल काए सेनोः जाना। इनिः दो निकिंग बागे किकिंगआ ते एन ठाँवेः सेनोः राःय तेयार चुकाव काना ओकोताः ते चि ओड़ोः जेताः लेका रेव काए रूड़ा। ओड़ाः रेले बोलो जाना। वारि रे पटी बिला काना। एन रे मदनाः गोए होड़ोमो गितिया काना। होटोः जाकेद नावा कारकिन ते दपाला काना। चेहरा सिदा तेवो गे ताजा लेलोः ताना। मेद जापिदा काना। मगर ताजान गेया। जाः बु मेन लेया एंगा-आपु किंग ताःते आयाः गोः हाम्बल हाड़ागु तान राः सुकु रासिका लोः। चियाः चि ने सुगड़ा लेकान होनाः जी एंगा आपु किंगाः एपरेंग-ओपोड़ः तेगे सेनोः जाना। अच्छा मार, हाथीराम जापाः रेगे मूर्ति लेकाए तिंगुआ काना। मदनः चेहरा लोः सटावा कान पुड़ुंगी राः ताना। जाः बु मेन लेया आयाः सिदा राः उडुः कोते। हाय रे जाला! नाता गोता राः बिलिका नाका मेनाः चि इमिन दिन लेपेल का मोने किः ने एंगा-आपु किंग ने हासा होड़ोवाः मोचा ते मिद टुंग जागार आईउम लागेन किंग राः गोएन ताना। ने लेकान प्रेम रेन सौ-सौ होन को हवड़ा, दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई कोराः रेल टिशन कोरे आमाः डोन्डो एंगा आपु ओड़ोः मामु भागिना दादा-दाई आयार कोरे सेंणा राः बा सोवन को पसराव जादा। निकु के मेद आरिद केया तेदो लेल लेको में। एंयाग तेः कुलि रेदो आपुते इतुआना। आपुतेः कुलि रेदो एंगाते इतुआन। तोबे होन सेनोः रेदो ओकोए ताःए सेनोगा?

मदन हासा गाड़ा तेको इदि जाःईया।

दुआरेः ताड़ोम केदा चि का मदनेः जागार एटेः केदा। होबा दडिवोः गा एना जागार जेतायाः लुतुर रे का तेबाः जाना। मेन्दो आईञाः जी कुडम दोए आईउम लाः।

मदन जागार लाः-

एंयाग गा आईञ के माफ ताईञ में। तिसिंगआते आईञ आबेनाः तारंन रे हाम्बल काईञ बईना। दुआर निःबेन। आईञ तिसिंग एन ठाँवएञ सेनोः ताना ओको ठाँवा तेईञ हिजुः लेना। आबेनाः काटा सुबा रे सौ-सौ बार जोहार!

आईञ मास्टर साब के काटा जाः किया तेईञ जोहार किया। आर नेया लोः साते तेगे तिसिंग राः आलेया फाकाटिया दुनुब चाबा जाना।

=०=०=०=

हिन्दी

1. माँ मुझे माफ कर दो

आह! कितना हँस मुख चेहरा, कुशाग्र बुद्धि और चरित्रवान था, वह लड़का। कल स्कूल के हाजिरी बही का उसका दस्तखत भी कहाँ सुखा है? आंगन पर उसके हाथों छिले दुबिला घास अभी ताजे हैं। लेकिन आज गैर हाजिर था, क्यों अब वह इस दुनिया से जा चुका था। हे विधाता तुमने हमारे लिए मृत्यु को कितना सुन्दर, आरामदेह और पूरी सच्चाई के साथ बनाया है, जहाँ दुश्मन भी दोस्त बन जाता है।

मास्टर सुधीर महतो ने जब हमारे सामने यह दहाड़ मारा तो एकाएक हम सभी के होश गुम हो गये।

अरे मास्टर साहब क्या हुआ? प्रो अखौरी चौंक पड़े।

प्रोफेसर साहब, वही हुआ जो मैंने कहा।

क्या मदन? वह तो...वह तो...महिला मण्डल के अध्यक्षा सह लेखिका सुप्रिया रानी ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा।

हाँ, मदन अब...। मास्टर जी ने बात को पूरी तौर से स्पष्ट करते हुए हमें बताया। इन फक्कड़बाज बुद्धिजीवियों के जमात में मेरा इसलिये पूछ है कि अपने आदिवासी कुटुम्ब भाई जनों के विषय में उन्हें दो पक्रियाँ लिख कर बता दिया करता हूँ। उन्हें बताता हूँ कि एक किसान को भादो महीने के भरी दुपहरी में, टुँगरी के जानलेवा ढलान पर, कुल्थी बुनने के बखत नाश्ते में क्या-क्या मिलता है। फिर हल-बैल खोलने के बाद वन-घाटियों के निःशब्दता को चीरने वाले उसके सुमधुर गीतों में कैसी कैसी जानें फंसी हैं? हाँ, फॉकट का चाय समोसा भी भला कैसे छोड़ता? सो पीछे के दरवाजे से यहाँ घुस आया।...और जब हम मदन के मृत्यु के तह में पहुँचे, तो आज के फक्कड़बाज के विषय ही बदल गया। नहीं तो इससे पहले ऐसे ही बेकार की बातों में हमारा बहुमूल्य समय बीत जाया करता था।

अर...अर...अर...नहीं। शायद मैं आप लोगों को गुमराह कर रहा हूँ। क्या पता कल को यह फक्कड़बाजी भी हमारे लिए जीने की आधुनिक कला-विवेचनाओं में शुमार होगा। जैसे कागज के फूलों पर खुशबू होने के बेवजह नोक-झोंक, बॉलीउड तिलस्मि बादशाओं के रंग-रंगीले प्यार की बातें, दमदमाते बॉडी के मसलें और स्काई क्रेपर से छलांग लगाने वाला नयनाविराम गुर...आदि...आदि। हाँ, भले ही वे नानी के कांथा बुनाई के माफिक एक ही पश्चिमीयत बोरो फिल्म को

सैकड़ों बार बुन-बुन 200 करोड़ के मालिक बन बैठें। इसलिये तिलस्मी बादशाओं और 200 करोड़ फूकने वाले देश के कर्णधारों को भी हमारा कोटि-कोटि प्रणाम! अब दखिए न, अमेरिका के ह्यूस्टन शहर में बाईबल के गढ़ में माइकल आस और जैरी डेविड नामक दो सख्श नास्तिक चर्चों के प्रचार-प्रसार में लगे हैं। और तो और यह आग लंडन के संडे एसेम्बली तक पहुँच गई है। अच्छी बात! इसी का नाम ही मानव विकास, परिवर्तनशील दुनिया...

गाजा-इजरायल में मानव-खून से होली खेली जा रही है। अंटर्टिका में वर्फ पिघल कर प्रलय मचा रहा है। जापान के ऊपर सुनामी का शनिग्रह बैठा है। तो कहाँ गये इन तथाकथित धार्मिक पाखण्डों के देवदूत? धर्म, रक्षक, भक्षक या फिजुल दिमागी खर्चा? इसी का जवाब पाने को आज सारा विश्व आतुर है। अपने पुत्रों की रक्षा न कर सके वह धर्म कैसा?

पक्कड़बाज की दूसरी कहानी यह है कि हम भारत के 10 करोड़ आदिवासी और देश के करोड़ों स्कूली बच्चे जल, जंगल, जमीन की रक्षा की बात करते हैं, प्रकृति पूजन की बात करते हैं, पेड़-पौधों पर राखी बाँधते हैं, चित, जल, पावक, गगन, समिरा में आस्था रखते हैं, जिनके बदौलत प्राणी जीवित है। इसी लिए भी यह जमात मुझसे प्रभावित है। मगर सच यही है। और सच्चाई दब नहीं सकता, इन्सान तोता नहीं बन सकता। इसीलिए बहुत खूब! कल यदि यह तर्क बोध इन धार्मिक पाखण्डों को धराशायी न किया तो दुनिया देखेगी, हाँ।

इस संदर्भ में फिल्म निर्देशक चित बसु तो अपने खट्टे अंगूर को मीठा बताने के अंदाज में सीना तान लेते थे। आज जब मास्टर जी के मुंह से मदन के माता-पिताओं के दर्द भरी कहानी सुनी तो तुनक कर बोल पड़े -

देखा आपने! नाहक पब्लिक हम फिल्म वालों को गाली देती है। अरे भाई इस फिल्मी काहिनी को कहाँ से लेता हाय, समाज से ही न! सॉमॉज में जो होता हाय उसी का तो फिल्म में उतारता हाय। कॉल इस काहिनी पर फिल्म बनायेगा तो आदमी, बोलेगा कि साला बंगाली का बच्चा सॉमॉज को मिसगाईड करता हाय, इसे मारो-पीटो। हम बोलता हाय, ईस मदन छेले के ऊपर यह जानलेवा हादसा शादी विहा के कारण हुआ। शादी नहीं होती तो बच्चा कहाँ से आवेगा। हाँ कि नहीं?

तो शादी बर्बादी! - बसु के इस बे सिर-पैर की बातों को सुन कर मेरे तन-मन भी डोले बिना नहीं रह सके।

अँ, आप लोग बोलता है, शादी बर्बादी? नाहिं, हम बोलता है कि अपुन देश का औरत पुरूष बिना सब सून हें...हें...हें...। चालू चाय का बेयरर ने चाय

समोसा लेकर चालू बात उतार दी। अब शादी को ले कर औरत जात कैसे चुप रहती? बेयरर की जली-कटी बातों से सुप्रिया जलभून हो उठी – ऐ छोरा बात सम्हल के बोला कर। तुम्हें पैदा करने में तेरा बाप शामिल रहा है कि नहीं? बात बोलता है। ला, गर्म समोसा और ओल की सब्जी दे। बड़ा औरत का ज्ञानी बनता है। हमें बराबरी का हक दो तो बर्बादी, संचय का पिटारा न बन जाए तो जानों।

मैडम मुझे मुआफ कर दो। ओल का पोल खुल जायेगा तो गाडागोल हो जायेगा।

क्या कहा, गोंडगोल?

हाँ मेडम। असल बात इया है न कि मेरी दुखिया माँ घर में विस्तर पर है। पिता जी कूछ बरस पहले डारिया से ऊपर चल गया। माँ कहती है, बेटा ओल की चटनी पीस के दो। नरेटी से अन्न उतरेगा तो जी को जरा शुकून मिलेगा। कल से हाथ-पैर पकड़े जा रहे हैं। सो, मेडम, मालिक का ओल चुरा कर घर ले गया। मालिक को पता चलेगा तो हम को नौकरी से निकाल देगा, मेडम.....हम तुम्हारा गोड़ लगता है...मेडम...और सच वह मेडम के पास जा कर झुकने लगा।

अच्छा, चलो मुआफ कर दिया-मेडम की जान में जान आ गई और भारी मन से बुदा-बुदाने लगी हाय, चाय, की प्याली में समन्दर।

लेकिन मुण्डा जी,

प्रोफेसर अखौरी मेरे तरफ मुखातिब होते हुए और सुप्रिया की बातों को ताड़ते हुए बोलने को आतुर दिखे। उन्होनें बात को आगे बढ़ाते हुए कहने लगा। मुण्डा जी, आपकी बातों में कुछ सच्चाई छिपी हुई है। मैं...।

अन्दर ही अन्दर मेरा मन कुलबुलाने लगा – आह ऐसा-ऐसा क्या कहा? जल, जंगल, जमीन का सलाना रोकड़ बनाने वाला आदिवासी बच्चा ऐसा क्या कहा कि मिसिमिपि, टेम्स और शिनानो के घाट का पानी पिया हुआ शक्स मेरी जुवान पे अटक गया? यह तो देश का नौवाँ आश्चर्य वाली चीज हुई। मैंने दुबारा पूछा, सर... सर...कुछ...? उन्होनें अकड़ कर हमें संबोधन करते हुए कहा।

ऐ, सुनिये महानुभव लोग, मैं अपने प्रोफेसरी के बखत लंडन, अमेरिका, जापान, पेरिस आदि जगहों का मर्म जानने वाला बंदा हूँ। वहाँ की वीरांगणाएँ पति परमेश्वर की बात नहीं स्वीकारतीं। पर बुढ़ापे की लाठी, औलाद तो चाहिए ही चाहिए। सो, पेरिस के एक बदनाम गली में मरियम ही मरियम हैं। जापान की युवतियाँ शरीर में केमिकल सीड इन्सर्ट कराती हैं...। इसलिये कुछ हद तक शादी

बर्बादी ही तो है। अपने देश में भी तो लोग कहते हैं शादी दिल्ली का ऐसा लड्डु है जो खाए वो भी पछताए जो न खाए सो भी पछताए।

बेयरर अब भी खूँटी पर पीठ टिकाए हमारी उटपटंग बातों को सुन रहा था। मेरी तरफ उसका हर्षित चेहरा मुस्कुरा रहा था जैसे रेगिस्तान पर के दुबिला घास पर साल की पहली बारिशा पड़ी हो।

जो भी हो, मुझ जैसे अल्प ज्ञानी इन्सान उपरोक्त लंडन, अमेरिका की बड़ी-बड़ी बातों को समझ नहीं सका। इसलिये मेरा जिज्ञासु मन मास्टर जी की तरफ खिसक गया। मैं जानना चाहता था कि विशेषकर ग्रामीण अंचल के मदन जैसे मासूम बच्चों को ऐसे जानलेवा हादसों से कैसे बचाया जा सकता है। पर इन बातों पर उनके श्रीमुख से उल्टी गंगा बहती देख मैं अचम्भित रह गया।

वह कहने लगे, मेरा अपना ख्याल है कि गुरू का असली गुरू तो उनके शिष्य ही हैं। गुरू ज्ञान तो बुढ़ा गये पेड़-पौधों के कभी उल्लसित रहे फूल-फल हैं, जहाँ सीखने-समझने की कतई गुंजाईश नहीं, जब कि नये अंकुरन में सीखने की अपार संभावनाएँ हैं। उस दिन मदन के घर जा कर मुझे कुछ ऐसा ही लगा। मेरा गाँव उसके गाँव हो कर जाता है जो थोड़ा ही दूर पर बसा है। जब मैं स्कूल जाता तो वह कभी घर पर मिलता, कभी राह पर...। कभी साथ-साथ चलते...। मेरी खाता-बही ढो-ढा कर मशक्कत करता...होमवर्क कभी नागा नहीं करता...बेवजह गैरहाजिर नहीं करता...। स्कूल के प्रांगन में पेड़ लगाने की बात करता...झूठ नहीं बोलता...धोखा प्रपंच नहीं करता....याने छोटा मुंह, बड़ी बात....छोटे हाथ बड़े काम.....छोटे पैर लम्बे-कदम....छोटा दिल बड़ी उम्मीदें...और क्या चाहिए हमें? जरा सोचें इस होनहार गुरू के हम शिष्य न हुए?

मास्टर जी के इस दर्द भरी कहानी सुन कर हम सभी पक्कड़बाज सकते में आ गये। लंडन, अमेरिका से लौटे प्रोफेसर की भी बोलती बंद। लेखिका सुप्रिया भी ममता की दुनिया में खो गई। फिल्म निर्देशक चितबसु गम्भीर स्थिति में चुप है। तब मैंने भारी मन से उनसे फिर अपेक्षा के अंदाज में पूछा। मास्टर साहब आपकी बातें छोटी, मगर घाव करे गम्भीर। इसी तरह, अपने उस होनहार गुरू-मुख से और भी ज्ञानबुद्धि हासिल किया होगा तो जरा उन्हें भी बताईए ताकि हम मूर्ख अभिभावकों को आईंदे का राह सुझे और हम सुधर जाएँ।

इससे मास्टर जी के धधकते जी में घी डालने के जैसा माहौल बना। यही नहीं, मैंने देखा कि उनकी आंखों में भावुकता की आंसू भी छलक आयी थीं। वह

कहने लगे –

... और हम कुछ लड़कों के साथ उस बच्चे को मिट्टी देने हाथीराम का घर पहुँच गये। घर-आंगन का मुआयना किया। बाहर, बारी में उसके हाथों रोपे गये आम, लीची, कटहल अभी सम्हल ही रहे हैं, अपने माली के दुख-दर्दों से अनजान-सा। दरवाजे के ठीक सामने अमलतास और उड़हुल भी सिर ऊँचा किए हुए खड़े थे। शायद इस आस में कि अब हमारा माली हमें चूम कर स्कूल जायेगा। लेकिन आज वह स्कूल नहीं गया। वह तो इन्हें छोड़ कर उस जगह जाने की तैयारी कर चुका है जहाँ से वह लौट कर कभी नहीं आयेगा। घर में दाखिल हुए। फर्श पर चटाई बिछी हुई है, जहाँ मदन का निर्जीव शरीर पड़ा हुआ है। गले तक नये मारकिन से ढंका हुआ है। चेहरा पहले से भी ज्यादा ताजा। आंखे मुंदी हुई। मगर रौनक भरे। शायद खुद को मां-बाप के बोझ से उतर जाने की खुशीयाली में, क्योंकि इस लाडले की जान माता-पिता के आपसी झगड़े ने ले रखा था।

खैर, हाथीराम पास ही मूर्तिवत खड़ा था। पत्नी पुडुंगी मदन के चेहरे पर चेहरे सटाए विलाप कर रही थी, शायद अपने किये-कराए पर पश्चताप करते हुए। ओह! ममता का यह कैसा नाता-गोता कि वर्षों उसे किनारे रखने वाला दम्पति आज उसी के मुख से एक शब्द सुनने को गिड़गिड़ा रहा था। मगर श्रीमुख है कि कुछ बोलता ही नहीं था। ममता रे ममता देख तेरे ऐसे ही प्रेम के सैकड़ों पुड़िया हवड़ा, दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई के रेलवे प्लेटफार्मों पर तेरे मूर्ख माता-पिताओं, अभिभावकों के आगे ज्ञान-पुष्प बरसा रहे हैं। इन्हें आंख खोल के तो देख लो...। माँ से पूछे तो बाप जानें। बाप से पूछे तो मां जानें। हाय, ये बच्चे जाएँ तो जाएँ कहाँ?

आरती उठने लगी।

दरवाजे का चौखट पार हुआ कि नहीं, मदन ने अपनी चुप्पी तोड़ी और निकलते-निकलते एक आवाज छोड़ गया। बहुत संभव है यह किसी के कान में न पहुँची हो। पर मेरी अन्तंरात्मा ने इसे सुन ली थी। आवाज थी –

'माँ मुझे माफ कर दो। आज से मैं आप दोनों का बोझ बन कर नहीं रहूँगा। किवाड़ खोलो। मैं उस जगह जा रहा हूँ जहाँ से आया था। चरणों पर सौ-सौ बार जोहार (प्रणाम)!

मैं मास्टर जी को चरण छू कर प्रणाम किया और इसी के साथ आज का फक्कड़बाज सभा विसर्जित हो गया।

=o=o=o=

2. सेरेद् रे पुटुड़ा कान सुकु

कुकु, ताकु, डोंडों, सुगी आर सालु.....। आपि होड़ो, सिटिया को आर बार होड़ो बाँडा दाः दंगिड़ि किंड! बुझाव जाः का तेपेबाः जान लेका आटकारोः ताना। सिटिया राः माने हारा राकाब तान, मुसुई-मुसुई एतांग लाचो चेतान गुचु ओमोनोः तान, आर बिजिर-बालांङ मेद, रापिद-जापिदोः तान सोमाय रेन कोड़ा होन को। आर बाँडा दाः कुड़ि होन माने हासा चाटुआते हुड़िङ चाटु होन ते दाः दुपिल तारे, तुलपाः डुरि लेल उरूमोः तान, दोरपोन रे लेलेन तान सोमाय रे मुरगुई-मुरगुई लांदा उड्डोतान सोमाय रेन कुड़ि होन को।

चिमिन बार ने होन कोलोः जामा-जामा खूँटी-राँची सहर हिजुः-सेनोः रेले नापामा काना। मागार आको आको लेका आईंञ, आईंञ लेका। माने आको दासी-कामिड़ी को लेका। आईंञाः गोमके साहेब को लेका। आकोआः ती कोरे जोनोः-कुदलाम साबा काना। आईंञ तारान रे साहेब बुगुली हाका काना। मियाद टाटा-मेजिक हिजुः केते तिंगु जाना। होड़ो गाहकी काकला जादा, एई चलो बिरसा चौक, खाद गढ़ा, राँची चलो...।

आर सोबेन ले देः तोरसा जाना। बोदे-बोदे आको जोनोः कुदलाम को सिरमा रेको राकाब केद चि सानामांङ सीट रेले दुब हापा जाना। जापागार ताना ले -

आपे दो होन को कोआ तेपे हिजुः ताना, राँची सेनोः पिचित जामा-जामा बू नापामा? आईंञ कुलि एटेः जाः कोआ।

"आईञाः हातु दो कातिंञ केल।"

"चानाः लुतुम दो?"

"सालु हें...हें...।"

"खूब माजाम लुतुमा काना।"

"आम दोगे?"

"आईंञाः लुतुम दो सुगा। हातु दियांकेला।"

"आहा चिमिन माजा सालु रे सुगाए मेन। आम दो बाबु?"

"लुतुम दो कुकु। हातु दो सियांञ केल।"

"वाह कुकु जी। आबेन दो हाले?"

"आईञाः लुतुम ताकु। हातु दो सिम्बुकेल।"

"आईञाः लुतुम दो डोंडो। हातु दो रूमतुकेल"

"वाह हाले वाह! याने आपेया लुतुम आर हातु को होबा जाना – कुकु, ताकु डोंडो, सुगा आर सालु।"

"हें हें...हें...हें...आम दो कोरे निः?"

"आईञ? आईञाः हातु लंगलोर। राः गोताः बुरू लातार रे। आईञाः लुतुम दो ढिल ढिल।"

"हें...हें...हें...(सोबेन को लंदा ताना) लोर रे लंग चेणें को जाः ताईन ताना।"

"हेई, ठीक पे काजि। नाः दो का सिदा सोमाय को ताई केना को मेनेया।"

"आर राः गोताः बुरू?"

"सिदा सोमाय राः कानाजि। बुर चेतान साः बिचागुटु मौजा रेन बारिया कुलगिया-बुड़िया किंञ उलि जोम किंञ हाड़ागु लेना को मेनेया। रूड़ा तान सोमाय रे मिद ढाकि उलिः दुपिल ताःई चि कुड़ि के बुरू जोला मुलि तेः आयार राकाब जाःईया। जोला रे हाम्बल ते कुड़ि राः केदा। एना तेको राः गोताः बुरू केदा।"

"बुरू रे कुला बुड़िया को जाः मेनाः कोआ?"

"हे सिदा को ताई केना। बुरू रे कुला लाता को मेना। पुन्डि कुला को ताई केना।

पुन्डि कुला जानार लुतुम को नागो मेनाः। नाः दो गोटा बिर चेणें कोगे राः बिउरेया। मियाद चेणें राःया-कुकु ताकु, कुकु – ताकु...ऊ...ऊ...ऊ...।

"आयँ हा...हा...हा...(कुकु आर ताकु ताकिञ आपारिद बेड़ा ताना)"

एन लोः दो गाड़ी डायबोर हिजुः लेना। आरेः काचापाचाओ बेडान ताना। आईं लेका देः साहेब होड़ो को सांगि जाना। गाड़ी रे काले सोआब ताना।

"एई कोताःम सेना पेरे? हाड़ागु में, हाडागु पे। चेतान चेतान देः पे चेतानो रे नेरे तीस टाका लागावा...हाड़ागुन में...।"

"काचियाम लेल जाः लेया। जानाव हटिया कामिनाला ले सेनोः ताना। हाँञाँ, तीस टाका ले ओमा का? पच्चीस टाका गेको आउ जाः लेया।"

" का का होबावा। एना गाड़ी तेगे सेनोः में...मंगरा...आ...आ...इन दिहाड़ियों को उतार दो। जायेगा तो लटक के जायेगा।"

"अच्छा"

"डाइबर गा काए पातिया ताना। जू दंगाड़ा को चेतान ते राकाब पे।"

"आवेन गा देला ताएम साः रे हाकान बेन।"

हुर...हुर...हुर...हुर...र...र... गाड़ी जोर ते चालाव केदा। बिरसा चौक रेले हाड़ागुन जाना।

आको ध्रुवा राः टेम्पो को साब केदा। आईं बाई पास रातु रोड तेईञ सेनोः जाना।

हाय रे जाला। बोःईञ तिरूब केद चि जी जी रेगेईञ उुडुः ताना, मियाद अमेरिकी कुड़ि दो सुगाड़ाईंग लेलोः का मेन्ते लाखों डालर खर्चा केयाते, कुड़ाम रे डंकु तोवाए (जाड़ा जो लेका) हाका रिकान जाना। आर आईञाः दिसुम रेदो लाई राः जाला ते जी होड़ोमोगे गाड़ी ताएवोम साः रे हाका केदा। कालामाटी कस्तूरबा स्कूल राचा कोरे नेकान होन को दौड़ी - किकिः बेड़ा जादा। निकु दो कामिनाला ध्रुवा को सेनोः ताना। स्कूल को जोः गासार बाड़ा, बाग-बागाईचा चालुः-पासका बाड़ा। नेया विधियाः लेखा चि सरकाराः धोखा। चि नसीब रा बांका रेखा, काईंञ मुन्डि दाड़िया दा।

इसुदिन बिताव जाना।

सालु दो आलेयाः कुपुल तेपेबाः गोः होन ताई केना। मुसिंङः हुलांग खून्टी पीट रे रेतोद सोसो आकिरिंञ तान सालुईंग नाम ताःईया। मागार सिदा लेका उईउः लुतुर दो बंगाःईया। जारोम सोसो लेका दंगार-दंगार, चारबार होड़ोम। जापागार ताना लिंग -

"चि माईया-तिसिंग दो हटिया कामिनाला दो काम सेनोः जाना?"

"हें...हें...हें...(जोआर जाःईंआःए) का गा आबा। नाः दोईंग पढ़ाव ताना। सोसो आकिरिंग चाबा जाना ते आपे ओड़ाः गे सेनोःईंग मोने तादा, चिटि ओम।"

"चिकान चिटि दे बेस चि बेकार?"

"ने"

"वाह! खूब माजाईञ आटकार केदा (बोः रे चापु केया ते आर्शीवाद ओमाई तान लोः) आईञओगे नेका दुकु तकलीफे तेगे ईञ पढ़ावा केना। नाः नुकुरी को नाम जान चि माजा ठोरोः ताना। हे, कामि कोरे का जोर-जुलुम कोः रेदो एना राः

सिविल का नामोगा। हे मार। गापाईञ हिजुः ताना आपे ओड़ाः।"

"इलि दो आकिदा काना चि का? चिमतांग एम सेनोः ताना कोलकाता दो?"

"ने हिजुगाः सोमार रेगा आबा।"

X X X

"बधाई हो सुमधि जी बधाई हो...। चिया सुमधियाईन बेस गेचि? टाका गे टाकाम लेका ताना। आले दो मिद पैसाव काले बोसा ताना।"

"चानाःम मेने सुमधि। इसु रेंगेः बालाय तेले बाई-बाई ओ ताना। चेतान ते आमाः सुमधिम दो आलेयाः मियाद बिनगा जाला।"

"का सुमधिन। नेका काको काजिया। दुकु रेगे सुकु नामोगा। सोबेन दुकु-बालाय रेगे हारा-माता कान होड़ो कोगे। हे कुरिः सुमधिंग दो काए लेलोगा?"

"ओड़ाः साःए लेल ताना सुमधिम दो। बारिया लेका ओते मेनाः। गोड़ा पिड़ि मेनाः। उरिः गाई मेनाः कोआ। मागार ओको हुलांग ताः ते सरकार टाका किलो चाउलीः ओम एटेः केद होड़ो कामि उदाम गेको होका उतार जाना। सुमधिमो एनका गे। कामि गे काया। नू गेः धंधाः। लाई दो काए मानातिंञा। पढ़ाव तान पढ़ाव तान गे होन में कुड़ि रेजा कामि राँची ले कुल किआ। ओड़ोः मामु तेयाः केटे ते स्कूल। रेले भर्ती उड़ा किया। चि सुमधि बेस बेकार को चिलका?

"खूब बुगिन खूब बुगिन। चेतान रिनियाः पोरताब सोबेन ठीक गेया।"

"नाः दो कोलकाता रेजाः नुकुरी लागाव जानाए मेन जादा। सेनोः तेया पैसाए नाम ताना। एना गे, आमतांग आए कामि ताना तेगे मिद बार पैसा ते नेः ने सेरेद बुगुलि रेईंञ रेबेद दुकु लाः।"

हेई, नाः दो इलाहाबाद बैंक कोलकाता रेन हुड़िंग साहिबाए बाई जाना, पी. ओ.।

एनागे मुण्डा जागार होड़ो कोईंञ काजियाबु ताना चि ओकोए जाः खूब माजा कानीकार रेदो होनांग ने घटना चेतान रे खूब बुगिन कानी ओल केद तेयाः होनांग। आईंञ दो मियद सेरेद रे पुटड़ा कान सुकु बारी उडुंगओः तानेईंञ लेल ला।

=0=0=0=

हिन्दी

2. चिथड़े में लिपटा सुख

कुकु, ताकु डोंडो, सुगा और सालु.... ।

तीन छोकरे और दो छोकरियाँ। हाँ, आपको समझने में कठिनाई हो रही होगी। छोकरा का मतलब बढ़ती उम्र, कोमल-कोमल जबड़ों के ऊपर पतली-पतली उभर आती मोछ और इधर-उधर नाचती-फिरती गहराई लिये नीले समन्दर सी आँखें लिये, नव तरूण युवक। और छोकरी का मतलब पानी भरा छोटा घड़ा सर पर लिये मटकती चाल के साथ उसके उभरते नितम्बों का दिखाई देना, एकान्त ऐं ऐनक पर अपना चेहरा निहारते समय खुद बा खुद मुस्कुराहट निकलना, ऐसे युवा काल की वीरांगनाएँ।

कितनी ही बार इन युवा-युवतियों के संग खूँटी-राँची शहर आने-जाने में मौका लगा है। आज भी हम साथ जा रहे हैं। लेकिन वे उनके जैसा। मैं अपना जैसा। याने वे दासी-मजदूर जैसा। मैं मालिक साहेबों के जैसा। उनके हाथों में झाड़ू-कुदाल धरे हैं। मेरे कंधे से एक साहेबी थौली लटकी है। इतने में एक टाटा मैजिक आ कर रूकती है। पैसेंजर ग्राहक चिल्लाता है - "ए चलो बिरसा चौक, खादगढ़ा, राँची चलो..... ।"

हम लोग तुरन्त-पुरन्त में ब़ैठने को मुड़ते हैं। हड़बड़-सड़बड़ में वे झाड़ू-कुदाल ऊपर लाद लिये और हम सब आमने-सामने वाली सीट पर बैठे बात-चीत करने लगे।

"बच्चे, तुम कहाँ से आते हो, हर बार आने-जाने में भेंट होती रहती है?" - मैंने अपना मुँह खोला।

"मेरा गाँव कतिञकेल है।"

"नाम क्या है, बताओगी?"

"सालु हें...हें...हें... ।"

"बहुत अच्छा नाम है तेरा। और बेटी तुम?"

"मेरा नाम सुगा है। गांव दियांगकेल।"

"अहा, कितना सुन्दर नाम, सालु और सुगा जो.... । तुम्हारा बाबू?"

"नाम कुकु है। गाँव सियांगकेल"

"वाह कुकु जी। और तुम दोनों का दोस्त?"

"मेरा नाम ताकु। गांव सिम्बुकेल है।....

"मेरा नाम डोंडो है। गाँव का नाम रूमतुकेल है।"

"वाह दोस्तों! वाह! याने तुम सबका नाम – धाम हुआ – कुकु, ताकु, डोंडो, सुगा और सालु और....।"

"हाँ, हें...है...हैं...। आप कहाँ के हैं?"

"मैं? मेरे गाँव का नाम लंगलोर है। राः गोताः बुरू के नीचे और मेरा नाम हुआ – ढिल-ढिल।"

"ढिल-ढिल हें...है...हैं...। (सब के सब अपना-अपना पेटको बड़ा पेट का उभार देते हुए)। उस लंगलोर गाँव में लंग पक्षी रहते होंगे?"

"हाँ, ठीक कहा तुम लोगों ने। अब नहीं। पहले किसी जमाने में रहा करते थे, ऐसा लोग कहते हैं।"

"और राः गोता बुरू?"

"हाँ, पहले किसी जमाने की बात है। कहते हैं पहाड़ के उस पार बिचागुटू मौजा नामक गाँव से एक दम्पति आम खाने के लिए तराई पर उतर आया था। लौटने के समय पतिदेव एक खाँचा आम सिर पर लाद कर पत्नी को पहाड़ के रास्ते चलने को कहा। पत्नी भारी भरकम भार के कारण चल नहीं पा रही थी। परिणामतः रोना निकल आया। इसी दिन से इस पहाड़ का नाम राः गोताः पहाड़ पड़ गया।"

"पहाड़ में बाघ सब रहते होंगे?"

"हाँ, पहले जमाने में रहा करते थे। अभी भी पहाड़ में खोह तो मौजूद हैं। सफेद बाघों का आश्रय। अभी तो चारों तरफ चिड़ियाँ ही चहचहा फिरती हैं। एक चिड़िया गाना गाती है – कुकु ताकु...कुकु ताकु...ऊ....ऊ....ऊ....।

आँय हा....हा.....हा....(कुकु और ताकु एक दूसरे को ताकते हैं।)

और इसी समय गाड़ी का चालक आ धमकता है। मेरे जैसे साहब सवारी जमा होने लगते हैं। गाड़ी में बैठने को सीठ नहीं मिल रही।

एई, कहाँ जायेगा? उतरो.... ।ऊपर चढ़ो....ऊपर.....ऊपर। हियाँ तीस रूपिया भाड़ा लगेगा। उतरो....।"

"हमें पहचानता नहीं क्या? रोज हम हटिया काम करने जाते हैं। तीस रूपिया भाड़ा देंगे? हुं रोज पच्चीस रूपिया देते हैं।"

"नहीं। नहीं होगा उसी गाड़ी में जाओ। .....मंगरा....आ....आ.... इन मजदूरों को उतार दो। जायेगा तो पीछे लटक के जायेगा।"

"अच्चा।"

"ड्राइवर नहीं मानता है। जाओ, जवान लोग ऊपर चड़ो। तुम दोनों पीछे लटक जाओ।"

हुर......हुर........हुर.....र...र....र....

गाड़ी तेजी से चलने लगी। बिरसा चौक में हम सब उत्तर गये। वे ध्रुवा का टेम्पो में चढ़ने लगे। मैं बाई पास से रातु रोड चला गया।

हाय, क्या बला! मैं सिर गड़ा के मन ही मन सोचते जा रहा था, एक अमरिकी लड़की ने तो सुन्दर दीखने के ख्याल से लाखों डालर खर्च कर अपने स्तनों को बड़ा आकार (पपीते के फल जैसा) दिलाया। अपने देश में तो पेट के खातिर पूरा हाड़मांस गाड़ी के पीछे लटका दिया।

देखा, कालामाटी, कस्तुरबा स्कूलों के आंगन पर इन जैसे हम उम्र बच्चे-बच्चियाँ उच्छल कूद कर रही थीं। ये तो मजदूरी करने ध्रुवा जा रहे थे, स्कूलों को साफ-सफाई करने, बाग-बगीचा कोड़-तोड़ करने। यह सब विधि का विधान कि सरकारी लापरवाही कि नसीब का टेढ़ापन मैं समझ नहीं पाया।

बहुत दिन बीत गये।

सालु तो हमारा दूर का मेहमानी लगती थी। एक दिन खूँटी बाजार में उसको सूखा हुआ भेलवा का फल बेचते हुए पाया। लेकिन पहले के जैसा उदास चेंहरा लिये हुए नहीं। पका भेलवा जैसा पीला, दमकता चेहरा है।

हम आपस में बात-चीत करने लगे -

"क्यों रे बिटिया आज तो हटिया काम करने नहीं गई?"

"है.....है....है.....(मुझे प्रणाम करते हुए) नहीं बाबा अब फिर से पढ़ाई करने लगी हूँ। भेलवा खत्म होने के बाद आप ही का घर जाने वाली थी, एक चिट्ठी देने।"

"चिट्ठी? बेस कि बेकार, देखें।"

"लीजिए।"

"वाह! बहुत अच्छा लगा (सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद देते हुए) मैं भी इसी तरह दुख-तकलीफ झेल कर ही पढ़ा हूँ। अभी नौकरी लगने के बाद

अच्छा लग रहा है। हाँ, किसी भी काम में लगन और परिश्रम के बिना उसका मीठा फल नहीं मिलता। अच्छा ठीक है। कल तुम्हारा घर आ रहा हूँ। हांड़ि चढ़ा है कि नहीं? कोलकाता कब जा रही हो?

"इस आता सोमवार को, बाबा।"

X X X

बधाई हो समधि जी बधाई हो.....। समधियाईन मजे में तो हैं? रूपिया ही रूपिया गिन रही है। हमें तो एक पैसा नसीब नहीं हो रहा।"

"का कहिएगा समधि जी। बहुत दुख-तकलीफ झेलने बाद कुछ बात बनने लगी है। ऊपर से आप के समधि जी तो अलग झमेला बना हुआ है।"

"नहीं समधियाईन जी। कहावत ऐसा है कि दुख में ही सुख छिपा हुआ होता है। सभी दुख-तकलीफ झेले हुए लोग ही हैं। कहाँ, समधि जी तो दर्शन नहीं दे रहे?"

"गाँव-घर को सम्हाल रहे हैं आप का समधि जी तो। गाँव में एक बीता जमीन है, टाँड़-टुँगरी है, गाय-बाछुर हैं। मगर जब से सरकार रूपिया किलो चावल देना शुरू किया लोग काम करना ही छोड़ दिया। आप का समधि भी उन्हीं में से है। काम ही नहीं करेगा। खाली पीने-खाने का धंधा। पेट तो मानेगा नहीं। पढ़ाई के दरम्यान ही आप की बेटी रेजा के काम में लगा दिया। लेकिन बाद में फिर मामा के जोर से स्कूल में भेजा। कुशल-मंगल तो हैं समधि जी?

"अच्छा, बहुत अच्छा। ऊपर वाले की दया से सब ठीक-ठाक है।"

"शायद अभी कोलकाता में नौकरी लगी है, ऐसा बिटिया कहती है। जाने के लिए रूपिया मांगती है। उसी समय एक-एक पैसा से जोगाड़ कर इस चिथड़े में कुछ पैसा जमा रखी थी, सो देख रही थी....।"

हाँ, अभी इलाहाबाद बैंक, कोलकाता में साहेबाईन हो गई है, पी. ओ.।

यही मैं मुण्डा भाषा-भाषी लोगों को बताने जा रहा हूँ कि मेरे स्थान पर कोई सफल कहानीकार होता तो इस घटना पर एक अच्छी कहानी लिख मारता। मैंने तो सिर्फ चिथड़े में लिपटा एक सुख को निकलते हुए देखा था।

=0=0=0=

3. कुड़ि पेडेः

रेगेः रबंग राः जेतन मुन्डि चि मेनः! ने कुंकल किंगवो अलिंग लेका गेकिंग रेंगेः तान ताई केना। मगर दिनोः लोः रेंगेःया तेकिंग उबर जाना। अलिंग दो ने रेंगेः रबंग रेगे ना मेनः लिंआ।

हुड़िंगा लेका साकिड़ि जोम केथाते, मिद कोरोए दाः नू केयाते जानव सेतः अंग जान लोःगे बिर तेलिंग सेनोगा। सान जाटा संगा-सारू कोलिंग उराउई। एना को रापाः रोंगो केयाते लिंग जोम रपुदे। आर खिड़की जापाः रे सेरेद पाटी बिल केयाते लिंग गिति सुन्दुईन। नेकागे अलिंगः जानव राः जिन्दीगनी दो।

नाः नाः गे बिर साः तेलिंग हिजुआ काना। ओड़ाः होड़ो दो अदिंग सः रे संगाए रापाः ताना। आईग पाटी रे गितिआ कान चिंग सुस्तयन ताना। एन लोः दो खिड़की कूँड़ रे मियद कुंकल अपिर आउन केते दुब जाना। आर नेतः हेन्ताः ए दुब-अपिर बेड़ा तान। एन लेका गे, गापा तेरे हिजुः केयातेईग लेल जःईया दो हुड़िंग लेका पचिरिः राकब तादा। मेयंग तेरेईग लेल किया ओड़ोः हुड़िग लेकार राकब तादा। आईग ओड़ाः होड़ो केईग राः जाःईया –

"ए ई....ई.....ई......हिजुः कोःम तो।"

"हाँ हाँ हिजुः तनईग। चानाःम राः जाःईया?"

"हिनिः लेल ली में।"

"कुंकल काकी ओड़ाए बाई ताना।"

"आम लेका निः।"

"हे.....हेगे। चिकाते का? कजि लेम तो? आम दो लन्डिया गाईड़ि। कमियो कामः।"

"हे मार! ने कुंकल कुडि लोःगे हिरूमेन में। एन कुंकल कोड़ा गे पुरः कमिया। संगम इसिन केदा चि आउरी गे?"

"आम दो संगा-सारू गेम कजिया। संगा-सारू ते चिमिन दिन सेसेना? एपेरंग गेम सिरजवा। ओड़ाः बाई रेव लन्डिया। ओते आड़ि कमि रेव लन्डिया।"

"आम दो चानःम फाटुब जादा तोबे?"

"काम लेल लाः गोड़ा पीड़ियाते पचिरि हसाईग दुपिलाउ लाः। बुरू जापाः

कुकरू डाड़िया ते दाःईग आउ लाः..... ।"

ने लेका गे अलिंगः जिन्दीगनी एपेरंग – "ओपोड़े ते सेसेन आउ ताना। मुसिंग ना दो एन कुंकल किनिंग लेल बाई जाः किंग। नेया कोचा रेव जोमेयः पेरेया काना। हाना कोचा रेव पेरेया काना। मियद कोचा रे कुंकल काकी सुकु-रसिका तेः बोलोवा काना। ओड़ाः होड़ो मुसिंग मुन्गा आड़ाः लेटेः होपोरा कःईग चिः कजियाईग ताना, ने कुंकल काका-काकी तकिनेम लेल जाः किंग?

"हेईग लेल जाः किंग।"

"चिमिन सेकेड़ा किंग पुंजी जाना। आर अलंग से चिमिन सिदा ते ने लेटे संगा-सारू कोगे लंग जोम बिउर ताना। होन गाड़ाँ को चानः तेलंग आसुल माजा कोवा?"

कोड़ा मोरोन लेका तेईग तेला उड़ा आःईया एना कोदो अलोम उडुआ जांबी। आम जोखोनेईग अँड़दि आउ ताः मेया, दोईग आसुल मेगेया। होन होपोन कोईग आसुल पेगेया।

जांबी कचरा गेः कजि केदा, का। नाः दो काम हिड़ि दड़ियाईग। नेका गे दिन दो सेनोः इदि ताना। ओड़ोः चिमतंगेम पुजीवा? आयर तेव ने रेंगेः टुकुर-टुकुर गे। आईग कुंकल काकी तःईग सेनोः ताना। अलोम मनाईयाँ।

"कुंकल काकी ताः?"

"हे।"

"चानः चिका हिरूमेन?"

"काः।"

"तोबे?"

"पुजीन राः होरा मुन्डि दँणाँ। सेणाँ इतुन।

हुँ, मुन्डि चाबा केः माईग। एन कुंकल कोड़ा ताः रे कोनेयानेम सेनोः रेदो सेनोः में। आईग ताः रेम ताईन रेदो ओड़ाः रे दुबा कनोः में। तिसिंग शहर रेज मियद सरकार बाबू पुजी राः होराए उदुब ताःईञा।

"जांबी एन लोःगे सोंगति जाना? जगारईग तनाए।"

"एई पुजीन होरा। चिलकन होरा? मार काजि लेम।"

"मांड़िते जगारेमें। हिनिः कुंकल लुतुरेः चुडुकुदा काद गेया। आलंगः जागरेः आईउम केरे दो अकिंग पुराः पुजीवोःगा।"

"हे मार काईग ककलाया। काजि में।"

आई जापाः ते हेपादाउन तान चिः कजियाई ताना – सरकार बाबु मेन जादा चि नाः दो आलंग लेकन रेगें: राबंग सोबेन हातु होड़ो को इपए तेगेः आसुल जाः कोआ। कामि उदम राः जेतन जारूडु बानोः।

जाँबीः बोः डोबोः डोबोः जाद लोःए काजि केदा, बिना कमि ते जोम। का का! आईग कुंकल काकी तःई सेन कोः गेया। होवा दड़िवा नेया नसीब होरा अकिंग सिदा इतु केदा। होला सरकार बाबुआः दुआरा ते चाउली किंग गोः दुपिलाउ ताई केना।

आर इनि कुंकल काकीयाः ओड़ाए सेनोः जान गेया। हन्डे किंग जागागर ताना?

"चि कुंकल काका काकी तकिंग मेनः बेना चि?"

"हे मेनईया। चि चिलका हासु चि दुकु? जापाः रे मेनः बेन रेव कबेन हिजुगा!"

"चेनःम मेने काकी। रेंगेः तान होड़ो कोअः दो मुण्डी चि मेनः? नाः जोमेयः कलिंग मुन्डि मदा। होन में कोड़ाः दो जेतन मुन्डि बनोः। खालि हुकुम बारि चालावा। मेताईग जानाय, ओड़ाः लंग ओम ताः किनलेकाते जू मिद टेयाः चाउलि दोकिंग ओमा मेगे जाः। सेनाउ कोः मे। एना तेईग हिजुआ काना। मेनाः रे दो मिद टेयाः चाउलि......।

"ओह! अमोगे जांबी, होनिंग कुड़ि बला चियाः कईगं ओमा में? ने मिद पुईला चाउलि। नः दो जेतन कजि बानोः। सोबेन रेंगे-हातु होड़ो को सरकार आसुल जाद कोआ। आबेनः बी.पी.एल. कार्ड दो मेनः चि बनोगा? नाःगे शहर सः तेलिंग हिजुआ काना। बोरा-बोरा चाउलि लिंग आगु तोरसा लः।

काकाईग दो?"

"नाःगे कुदलम सबोड़ो इदि केयाते गाड़ा साःए सेनोः जाना। मियद दाः लोएवोंग लिंग बाई बाई जादा।"

"आते काकी! सरकार दुब-दुब ते आसुल जाः बेन रेव बेन कामि गोएन ताना?"

"हे बिटि कामि का कामि कोः रेदो जोम दो नामोगा चि? कमिकमि ते बोतोः इदि लेरे चि जोमेयः बोतोः गोःवा। आबेन लेका बनोः कोः आते चपुबड़ान रेदो

कोतः होबावगा? सरकार आसुल जाः बुआ एना मेन्ते कमि उदम गेबु होका रेदो चिलका बाईयोगा?" आबेन लेका बानोः कोःआते चपुबाडन रेदो कोतः होबावगा" - नेय जागर आईउम केयाते जांबी कुड़म रेगेः रोः जाना। आर ओड़ाः रूआड़ा केयातेः कोड़ा केः सिगिद जाईया आम दो ओको दुनिया रेम जीदेन ताना? आईग पुजीन तेयः असली होराईंग इतुआउ तादा। अलंग वो गे इपए ते चाउलि लंग नमेया। मगर दुब दुब ते कलंग जोमेया। एटाः कोवाः लंग कामि बोतोगा। जोम-जोम ते सारेः जानाः ते एना कोलंग जोगव इदिया। इलि आरकी रे कलंग खर्चया। कड़ी-कोलादते कलंग टोपे ना। बुरू जारा कोलंग सफाया। गोड़ा-पीड़ी कोलंग कामिया। गाड़ा-लोर कोलंग तोलेया...।"

जांबी कोड़ा लेकाए सिखाओ जःईग चि तला रेगेईठा कजि कोटोंग जाःई - काकीमजाः ए रानुबुल तःमे। एटाः गेम जागार जादा। इनिः ओड़ोः गेः तुद राकाबेन ताना-पुजीन राः होरा दो गाड़ा दिरि बुरू जोला गेया। कुदलम सबोड़ो साबेमे दोला। काका काकी तकिंग गाड़ा किंग तोल जादा। आलंगवो बुरू लंग हंदिड़ि।

ओड़ाः होड़ोआः रिकिकिकि ते आईञाः जी मेन केदा-कुड़ि काजिवो जा ठीकगे.....। आर तिसिंग अलिंग बुरू हंदिड़ि लिंग सेनोः ताना।

आईञाः तारन रे कुदुलम सबोड़ो मेनः। लांबीयः बोःरे कंची। कुंकल काका-काकी तकिंगः पुजीन होरा ते ओड़ाः होड़ो जांबी आयर जःईग। "कुड़ि पड़ेः नेया गे" शहर रेन सरकार बाबू ताको जागर तनेईंग आईउम बेड़ा कोवा।

=o=o=o=

हिन्दी

3. नारी शक्ति

गरीबी का कोई ठीक-ठेकान है क्या? ये फतिंगा भी हमारे जैसा ही गरीब थे। दिन गुजरने के साथ-साथ वे गरीबी से उबर गये। मगर हम हैं कि जहाँ के तहाँ ही रह गये हैं। कुछ कौर गले उतार कर और कच्चा पानी पी कर हम दोनों रोज सबेरे उठ कर जंगल जाते। जलावन की लकड़ी, कन्दमूल आदि बटोर कर लाते। यही सब पका खा कर दिन गुजारते थे, और खिड़की के सामने चट्टाई बिछा कर रात गुजारते। यही हमारी दिनचार्य है।

हम अभी-अभी जंगल से लौटे हैं। पत्नी घर के भीतर कन्द आग में पोड़ा रही है। मैं चट्टाई पर ही सोए-सोए सुस्ता रहा हूँ। इसी समय एक छत्ता उड़ कर कोने पर बैठ गया। वह इधर-उधर उड़-फिरने लगा। इसी तरह दूसरे दिन भी देखा। आज तो उसने कुछ माटी का दिवाल भी उठा रखा है। फिर तीसरे दिन कुछ और उठाया.....।

मैंने अपने घर वाली को बुला लिया।

"एई...ई...ई....इधर आओ तो।"

"हाँ...हाँ आ रही हूँ, क्या बोलते हो?"

"वो...वो, उसे देखो तो!

"..........चाची घर बना रही है।"

"तुम्हारे जैसा।"

हाँ....हाँ बिल्कुल। क्यों नहीं? बोलो तो। तुम तो कोढ़िया मारा। काम भी नहीं करते हो।

ठीक है। उसी छत्ता रानी का सौतन हो जाओ। वही छत्ता मर्द ही ज्यादा काम वाला हो गया है। कन्द पकायी कि नहीं?

तुम तो कन्द-मूल का ही बात करते हो। कन्द मूल से कितना दिन चलेगा? झगड़ा ही शुरू करते हो। घर बनाने में भी आलसी, खेती-बारी करने में भी आलसी।

तुम तो कौन भारी पहाड़ उठा कर लाई हो?

देखा नहीं दूर-दूर से घर बनाने के लिये मिट्टी लाई। पहाड़ के तराई से

चुआँ डाड़ी का पानी लाई.....।

इसी तरह हमारा दैनिक जीवन किच-किच से चला आ रहा था। एक दिन हम उन छत्ता दम्पति को देखने लगे। इस कोने पर भी खजाना भरा है, उस कोने पर भी खजाना भरा है.....। एक कोने पर दोनों पति-पत्नी आराम फरमा रहे हैं। एक दिन घर वाली मुन्गा साग की खिचड़ी परोसे पति से कहती है, देख रहे हो इन छत्ता.. ...काका-काकी दोनों को?

हाँ देख रहा हूँ।

"कितना जल्दी ये अमीर बन गये और हम कितने पहले से यही कन्द मूल खिचड़ी ही खा रहे हैं। ऐसे में हम बच्चों का पालन-पोषण कैसे कर पायेंगे? पुरुषत्व के बल उसे कहता हूँ, वह सब सोचो मत। जब तुमको ब्याह कर लाया हूँ तुमको खिलाऊँगा ही। बाल-बच्चा सब पोसूँगा ही।

जांबी मुझे ताड़ते हुए कहती है, नहीं, अब मुझे नहीं ठग सकते हो। इसी तरह दिन तो बीत रहा है। अब कब अच्छे दिन आयेंगे? आगे भी यही दुखः-दशा ही रहेगी। मैं तो छत्ता चाची के यहाँ जा रही हूँ। मना मत करो।

.... चाची के यहाँ?

"हाँ"

"क्या करने......सौतिन बनने?"

"नहीं।"

"तब?"

"अमीर बनने की राह खोजने। ज्ञान-बुद्धि खोजने।

"हुँ, तुमको अब अच्छी तरह समझ लिया। उसी छत्ता पुरूष के पास ही चली जाओ। यदि मेरे पास रहना चाहती हो तो घर में बैठे रहो। आज बाहर का एक बाबू साहेब अमीर बनने का राह सुझाया है।"

जांबी तुरंत पति से दोस्ती का हाथ बढ़ाती है। वह उससे कहती है।

"एई अमीर बनने का रास्ता? कैसी राह? बोल!"

"आहिस्ते बोलो। वो छत्ता.....काका-काकी कान खड़े किए हुए हैं। हमारी बात सुन लेंगे तो हमसे ज्यादा धनवान हो जायेंगे.....।"

"अच्छा, नहीं हल्ला करूँगी, बोलो।"

वह मेरे पास सरक आती है और उसे बताने लगता हूँ।

“सरकारी साहब कहता है। अब गाँव में लोगों को मुफ़्त अन्न दिया जा रहा है। काम करने का कोई जरूरत नहीं।

जांबी सिर हिलाते हुए कहती जा रही है, बिना काम किए हुए खाने को? नहीं नहीं। मैं छत्ता काका-काकी के यहाँ जा ही लूँगी। बहुत संभव है उन दोनों को पहले इसकी खबर लग गई होगी। कल वे दोनों सरकार के दरवाजे से चावल की बोरी ढो-ढा कर ला रहे थे। और वह छत्ता काकी के पास चली गई। वहाँ उनके बीच वार्तालाप होता है –

“छत्ता काकी घर में हो तो?”

“हाँ, हूँ। कैसा? सुख खबरी है कि दुख सबरी? पास रहते हुए भी भेंट मुलाकत करने नहीं आती हो।”

“क्या बोलियेगा काकी जान। गरीब दुखिया लोगों का कोई ठीक ठिकान रहता है क्या? अभी पकाने वाला अन्न नहीं, घर में। तुम्हारे बेटे का तो कोई ठिकाना नहीं। केवल हुकुम चलाता रहता है। कहता है, हम उन्हें रहने को घर दिये हुए हैं। इस ख्याल से जा आ लो। एक मुठ्ठा चावल तो देंगे ही। इसी आशा में आई हूँ। अगर है तो एक पाईला चावल....।

ओह तुम भी मेरी बेटी लगती हो। तुम्हें कैसे नहीं देती? लो एक पईला चावल। अब कोई बात नहीं रह गई। गाँव के सभी गरीब-दुखी को सरकार मुफ्त अनाज देती है। तुम दोनों को बी.पी.एल. कार्ड है कि नहीं? अभी-अभी शहर से लौटे हैं। बोरी का बोरी चावल ढोकर लाई।

काका कहाँ है?

“अभी-अभी सबर-कुदाल ले कर नदीं की तरफ चला गया है। एक खेत का मेंड़ जो टूटा है।

“अच्छा काकी एक बात! सरकार बिना काम के ही तुम दोनों को पाल-पोस रही है। फिर भी तुम काम करते-करते मर रहे हो?

“हाँ रे बिटिया हाँ। काम नहीं करने पर खाने को कैसे मिलेगा? खाने का रहते हुए काम करने पर ही तो खजाना-भरता है। तुम दोनों जैसा खाने को लाले पड़ने के बाद अनाज खोजोगे तो कहाँ मिलेगा? सरकार हमें पाल रही है, इसका मतलब हम काम करना ही छोड़ दें तो कैसे काम बनेगा?

तुम्हारे जैसा खाने को लाले पड़ने के बाद......बात सुन कर जांबी अन्दर

तक हिल उठती है। घर जा कर पति को भला-बुरा सुनाने लगती है, तुम तो किस दुनिया में जी रहे हो? मैं अमीर बनने का सही रास्ता जान कर आई हूँ। हम भी मुफ्त में चावल पायेंगे। मगर उसे घर बैठे नहीं खाना है। खाने का रहते हुए भी दूसरों के खेत में काम करने जायेंगे। खाने से जो बचे उसे रखते जायेंगे। हड़ियाँ-दारू में खर्च नहीं करेंगे.....। ऋण-उधार में नहीं डूबना है। जंगल साफ कर खेत बनायेंगे। टाँड़-खेतों को आबाद करेंगे। नदी-नालों को बाँध कर खेत बनायेंगे.....।

पत्नी जांबी पुरूष जैसा मुझे समझाने लगी है तो मैं बीच में ही टोकता हूँ, छत्ता काकी खूब अच्छी तरह से पढ़ा के भेजी है, शायद। उल्टा ही बात करती हो। वह और ताव दिखाते हुए कहती है धनवान होने का रास्ता तो दुर्गम है। पहाड़, पत्थर, नदी, नाले हो कर जाता है। कुदाल, सबर पकड़ो चलो। छत्ता....काका छत्ता काकी दोनों मिल कर नदी बाँध रही हैं। हम भी पहाड़ तोड़ेंगे....।

घर वाली के किच-किच से तंग आ कर मन ही मन सोचा कि इसकी बात भी रख लिया जाए तो इससे राहत मिल सकता है।

......और आज हम दोनों पहाड़ तोड़ने जाते हैं। मेरे कन्धे पर कुदाल-सबर धरे हैं। जांबी के सिर पर खाँचा धरी है। आज पत्नी मुझे दोनों छत्ता काका काकी द्वारा बताये गये अमीर होने के राह पर बढ़ाए जा रही है। मुझे गर्व है, नारी शक्ति यही अक्सर शहर के सरकारी बाबू लोगों को कहते सुनता हूँ।

=o=o=o=

4. मेद्-लेपेल सुकु

मेद रे मेददाः पेरेया कान लोः इनि काजि इदि जाद ताई केना-इनिः गे हे... इनिःगे ताई केना...इनिः गे...। इनिः लेका गे, चान्डुः लेका सुगड़ा मेद् मुड़ा तीया। एन होन कोआः चुलुई-बुलुई....जोआ कोरे तुर्ग लुसुई ऊब...लाचो भीतर मोती को लेका जाका-माका डाटा तीया...।

हे गो शबनम मुसिंग निदा कुमु रेईञ लेल लिया। गोटा चान्डुः राः मासकल रे ओटंग बिउर तान हेन्दे गुल-गुल लारि को नेते-हेन्ते हिजुः सेनोः तान ताई केना। आर लारि भीतर कोआ ते कोएवोः बेड़ा तान लोःए राःजाःईञ ताई केना, एयांगा हिजुः कोः मेतो हें...हे...हें...हिजुः में...हुडिंग सुपिद् ताईञ मेतो...आईञाः किताब को दो सामटाव ताम...स्कूल सेनोः राः सोमय होबाव ताना। एयांग..एयांग...गा..। हे तिसिंग दो कथक सुसुनोःए इतुईआ आईगाः गुरू...। आचकोगे जबेईञ एवोन जाना दो मोचा ते काकला उडुंग जाना, रूप...आ...आ...आ...। रूपचाँद अँ... अँ...। जापाःरे दुडुम तान आपुतेव आचका गेः बिरिद जाना। इनिः के कुमु रे लेल लेद् सोबेन कानी कोइंञ उदुबाःईया। आर आलिंग बारानकिंग हान सिदा राः दुनिया रेलिंग आद जाना ओकोन दुनिया रेचि सारते गे इनिः मेद् जापाः रे जुल तान चुडुः इपिल गे, ताई केना।

निकिनाः ओड़ाः जापाः रेगे आलेयाः ओड़ाव मेनाः। एन लेका ते आले सोबेन जापाः कोरेंन सोंगे को तान ले। ईद-राखी को लेकान पोर्बो कोरे मिद् कोरे गेले दुब जारू बेड़ाः।

मेन्दो जाःबु मेन लेया चि गीताः भोगोमन नेया गेः सानंग तान ताई केना चि इनकिंञाः ओड़ोः होन आलो को होबाव का। ओड़ाः रेन दीया। कुड़ी होनो निगे। कोड़ा होनो निगे। दुलाड़ा ते निके बारान किंग बेटा गे किंग मेताई। ओड़ाः रेन एसेकर होन मेन लेका ते इनिः पुराः दुलाड़ा रेगेः हारा-माता जाना। एनामेन्ते इनियाः चाईल-चोलोन कोरे चुलुंग-बुकुई हिजुः इदि जाना। इनिः रे सुसुन-दुरंग कोराः रासिका रासे बोलो जाना। एंगा-आपुते ताकिञ बारंज किंञ पढ़ाव-लिखाव कान किंञ ताई केन गे। इन किन इनियाः आयार ते सेसेन राः होरा किंग मुंडि केदा, आर एन मुलि ते सेसेन रेकिग देंगा इदि किया। आपी सिरमा लेकाए होबा जान चि जापाः

राः मियाद स्कूल रेकिंग भर्ती किया। सोमय सेनोः इदि तान लोः इनियाः काजि कामि को गे संगि इदि जाना......स्कूल राः पढ़ाव लिखाव को नागेनो गे जवाबदेही को संगि इदि जाना...क्लास कोराः होमवर्क को बाबाई टोः जाना....।

हे, सारतेगे, आबु स्कूल-कॉलेज कोरेन गुरू कोताः तेगेबु इतुआ कादा चि सोबेन होन कोरेगे जाँनाः का जाँनाः गुण ताइन तान गेया। उम्र आर सोमय लोः ते एना आए तेगे लेल उरमोःआ। आर नेयाव गे चि जीवोन रे होड़ो बाईन नागेन एन होरा तेगे सेसेन लागातिंञ, ओकोन होरा रे इनियाः खूब मोने-सानंग मेनाः। आईञ लेल नाम केदा चि ने होन रे भोगोमन मियादा ते बारिया गुणेः ओम कुला काः ईया। मियाद दो इनिः रे नकल सासाब राः चुटि रेगे सेंणा बोलो ताना। एटागाः, इनियाः सुगाड़ा एसेल होड़ोमो मेद मुड़ा तीया। चिलका मेनाःईया एनका गे लुतुम मेनाः। एना मेन्तेगे जाः इनियाः लुतुम रूपचांद को दो केदा। सात साल होबा-होबाव तान लोः इनिः के जापाः राः सुसुन-दुरंग स्कूल रेकिंग भर्ती किया। एना मेन्ते इनियाः ओड़ोः गे काजि-कामि कोरे हम्बल हिजुः बोतोः इदि जाना। स्कूल कोराः पढ़ाव को ओड़ोः सुसुन-दुरंग कोराः कजि-कामि को संगिइदि जाना।

मेन्दो होड़ोमो जान मिशीन दो का तानाः चि सोबेन इम तांग सेसेनाकान ताईना। आर मिशीनो गेचा रूडून लागातिंगआ। रूपचाँदआः जी रेव जानाव-जानाव राः काजि-कामि कोते लागा हिजुः एटेः जाना। हान्ते, दिसुम भीतर, सोजा गे, गुरू कोआः होटोः चेतान रे, सादाव राः तारावड़ी दो बिनगा गे बोरोआन चीज तानाः। नेया गुरू गोमके को आर एंगा आपु को ताला रे जागारेयाः बिषय होबा दाड़िवोगा चि सेंणा ओम-आजोम राः होरा चिलका होना चाई - नोरोम चि केटेः?

आबु गुरू गोमके कोआः मोचाते नेयावबु आइयुम तादा चि पढ़ाव तान होनको चाहे कामि तान होड़ो को कामि राः जो नाम बदला रे कामिया कान को ताईन का। सवाल दो नेया चि आबुआः सेंणा राः नियम-कायदा, कामिः ओतोंग का चि बेगार काजि-कामि राः जोए असराए का? आबु नेयाबु लेल जादा चि गुरू गुरूआईन को एटाः एटाः सरकारी कामि को को टोः ताना। एना मेन्ते होन को पाढ़व राः पूरा-पूरी सोमय काको नाम जादा। आर नेया कोराः एद्‌कान असर होन कोआः परीक्षा कोरे टोः ताना। मेन्दो ने मुलि जेतायाः ध्यान का सेनोः ताना। इनकु दो बुगिन ते बुगिन परीक्षा राः जो नामोः का। कारे दो गुरू गोमके कोगे इतुआना। आईआः हिसाब तेदो ने लेकान टुआर-टापार उडुः विचार काजि-कामि कोराः चलते गे एनेटेः

स्कूल आर होनको पेंदा रेगेको संजुआ काना। आर गोएवो को गोएन ताना। नेया कोराः गे गुरू गोमके कोआः खींस को होन कोरे लेलोः ताना।

होड़ो काजि आईउमोः ताना चि ने रूपचांदयाः चेतान रेव ने लेकान खींस गे थुगुड़िया काना। स्कूल रेन गुरू गोमकेय याः केटेः हुकुम मेनाः चि स्कूल राः बुगिन रिजल्ट हिजुः होना चाई....अखबार कोरे स्कूल राः बुगिन लुतुम हिजुः होना चाई... नेका...नेका...। तोबे ठोरोः ताना चि नेका बाई नागेनते लातार क्लास कोआ तेगे बाबाई होबावागा। एना मेन्ते नाः दो रूपचांद मिसा-मिसा होम वर्क का बाई आउ राः एरंगवोएः नाम एटेः जादा। रूपचांदयाः एंयांग ते काजि जादा, एन हुलंग एतोवार राः दिन ताई केना। सुसुन-दुरंग स्कूला ते निदा, लागाओगेः हिजुः लेना। स्कूल राः होमवर्क काए बाई दाड़ि जाना। गापा तेरे स्कूल रेन गुरूआईन रेगड़े सेः जाःईया –

गुरूआई – होम वर्क?

रूपचांद – मेडम...मेडम...मेड...काईंग बाईआउ तादा।

गुरूआई – चिलका ते?

रूपचांद – निदा लागाव गेईञ हिजुः लेना। आरिंग दुडुम तोरसा जाना।

गुरूआईन – लागाव गे, निदा ओकोकोते आतिंगएम सेनोः बेड़ा ताना?

रूपचांद – मेडम...ओड़ाः जापाः रेगे सुसुन-दुरंगगईञ इतुन ताना।

गुरूआईन – अच्छा, बुझाव जानाईंग। आम ने स्कूल रे पढ़ाव लेकान होन का तान में। नाः दो सुसुन-दुरंग में, आर आँडदि कोआ ते ओड़ा-दुआर चालाव में। हे, तिसिंग आईञ आमाः गुरूअईन का तानि। हिनि...हिनि सिंगि बोंगा। जू राचा रे तिगुआ कान में, आर काईञ राः रूड़ामे बारि तिंगुआ कान में, जू। बुझाव जानाम? तिसिंग आमाः टुन्डु दिन तानाः।

स्कूलीया होन को ताः ते काजि आईउमोः ताना चि इनिः मिद घंटा जाकेद जोटे रेः तिंगु केना। एन लोः दो जाँए जाना तेः उईउः जाना। गीता ताकिंग लोः आईञो गेईञ दौड़ी आउलाः, आर नाः आले राजराः मारंग अस्पताल रे मेनाः लेया। आईञ ने अस्पताल राः लुतुम उदुब का सानंग जाः ईञा। हे, नेया ठाँव डाक्टर को, हासु तान को, आर आकोआः होड़ो को ताला रे एपेरंग – ओपोड़ेः राः अखाड़ा लेका काजि ले रे जेतान गिउः – सोरोम काईञ आटकर जादा। जाँएँयाँ कान हालत रेगे अस्पताल ले तेबाः लाः। हान रे पता लागाव जाना चि हुपुडिंग डाक्टर कोआः हड़ताल सेसेन ताना। अस्पताल रे हासु तान कोआः रानु-जियाँड़ाँ ठीक लेका का

होबा ताना। निकिंगः निमिन पेड़ेओ बानोः चि हासु तानिः के एटाः अस्पताल तेकिंग इदि दाड़ियाईया। अच्छा, जाँ लेका लेका ने अस्पताल रे भर्ती दो होबा जाना। मगर ने दुकु तान कुड़ी होनाः नसीब रे गितिः तेयाः पारकोम का ताई केना। तुंगुर-मुंगुर हासु तान को आर ओड़ाः होड़ो कोलोः गे हेन वारि रेगेः गितिः जाना। आले दो डाक्टर को दाँड़ा ते ले दौड़ी बेड़ा जादा। जब डाक्टर दाँड़ाउ केया तेले रूड़ा लेना दो रूपचाँदयाः जी सेनोः चुकावा कान ताई केना।

हाय ताईञ गोड़े जाला, सेंणा...बुद्धि...ज्ञान.....। आईञाः अलय-बलय तान जी भीतर-भीतर रेगेः काकला गोएन ताना। आखिर सेंणा आजोम राः चिलका चाईल-चोलोन, नियम कायदा होना चाई? सेंणा आजोम राः चाणाः मोने मो-तोलोब मेनाः? ओह! सेंणा आजोम दो सेवा कामि गेचा। सेंणा राः मोने-मोतोलोब दो होड़ो बाबाई गेचा! मेन्दो ने होनाः नागेन सेवा का ताई केना। बुगिन जो राः सिबिल नानाम राः हाया ते बुगिन कामि को रिडिंग जान राः एकदम ठीक साजाई ने माजा लेकान होनेः नाम केदा। हे नियम-कायदा बार्ड तान बाबू-बाबुआईन को, जी-जीबोन आलोपे रोगोदया।.......ठीक लेका उड़ुः हुनर रेपे। बस, नरक कोसा ते सोरगो नानाम रे जेतान हेड़ा बानोंः आईञाः लो तान जी भीतर-भीतर गे नेकाय काकाला कोएन जाना।

रूपचाँदयाः एंगाते जब कुमु काजिः काजि केदा दो आईञ आईञ रेगे ईञ बुझावोन जाना चि नेया कोदो जेतनाःव कागे, मियाद मेद लेपेल सुकुबारिगे। मियाद बागे ताद कोठि रे हाका कान बिंदिर जाल गे तानाः। नेया को उड़ुः तान लोःगे आईञाः भोगोमन अल्लाह ताः ते इनियाः बुगिनो राः ईञ अर्जी-विनती किः।

=o=o=o=

हिन्दी

4. नयन सुख

आँखों में आंसु छलछलाते हुए वह कहती जा रही थी - वही थी। वही.... । चाँदनी रात में मुझे दिखाई दे रहा था, उसी के जैसा चाँद सा मुखड़ा। वही बाल सुलभ चेहरा पर भोली-भाली झुलफें.....। गुलाबी होटों के बीच मोतियों सा चमकते दाँत....वही चुहल....चौकड़ी...।

हाँ, शबनम, एक रात को मैंने सपने में देखा। पुर्णीमा की चाँदनी रात। उमड़ते-घुमड़ते काले-काले बादलों के बीच अठखेलियाँ खेलते हुए वह मुझे रह-रह कर पुकार रही थी, माँ हें....हें....हें.....आईए न मेरे पास....मेरी चोटि तो बाँध दो...खाता-बही तो समेट दो....अब स्कूल जाने का समय हो चला है..माँ...मां गो...। हाँ, आज तो कथक नृत्य भी सिखाएगी मेडम...।

अचानक नींद टूटी तो सहसा मुंह से आवाज निकल गई रूपा....आ.... आ...आ...रूपचाँद....मेरा चाँद....द...द...द...। मेरी आँखों का रूपचाँद... द...द...द...। बगल में सोए पति देव आवाज सुन कर चौंक उठे। मैंने उनको सपने की सारी कहानी बतायी और हम उस दुनिया में खोए रहे और अब भी हैं जहाँ साक्षात में वह हमारी आँखों का रूपचाँद थी।

इस दम्पति के पड़ोस में ही हमारा घर है। इसलिये हम आपस में एक-दूसरे के पड़ोसी हैं। पड़ोसी होने के नाते सामाजिक जीवन में भी मेल-जोल है। ईद-राखी जैसे त्योहारों में हम एक-दूसरे के घर जा कर प्रेम-भाईचारे के तहत गले मिलते हैं। उठते-बैठते हैं...।

पर, गीता के ईश्वर को यही मंजूर था कि परिवार में और कोई औलाद न हो। रूपचांद घर का चिराग! बेटी भी वही, बेटा भी वही। प्यार से दोनों माँ-बाप उसे बेटा शब्द से ही पुकारते हैं। घर का एकलौता संतान होने के कारण वह लाड़-प्यार में ही पलती-बढ़ती रही। इसलिये चाल-स्वभाव में चुहल-चुल भोलीपन का आना स्वाभाविक ही था। यही कारण रहा कि छोटी उम्र में ही उसके हृदय में व्यवहारिक कला का निखार आता गया। उसमें नाचने-गाने का शौक चर्राता रहा। माँ-बाप पढ़े-लिखे तो हैं ही। उन्होंने बच्ची की प्रतिभा को पहचान लिया और इसी ओर प्रोत्साहन भी देते गये। तीन साल की उम्र में कस्बे के एक नामी स्कूल में दाखिला

दिया। दिन बीतने के साथ-साथ क्लास भी बढ़ता गया.....पढ़ाई के प्रति पढ़ाई-लिखाई बढ़ती गई...होम वर्क का काम भी बढ़ता गया।

हाँ, हमने गुरू जनों के श्री मुखों से ही सुना है कि हर विद्यार्थी में कोई न कोई प्रतिभा छिपी हुई रहती है जो उम्र और मौका के संयोग से स्वतः ही वह फूट पड़ती है और यह भी सुना है कि जीवन में सफलता पाने के लिये उस विद्यार्थी को उसी ओर बढ़ना चाहिये जिस ओर उसकी रूचि हो।

मैंने देख पाया कि इस बच्ची को ईश्वर ने दोहरा प्रतिभा दे रखी है। प्रथम तो उसमें कला प्रदर्शन का अद्भुत क्षमता है। द्वितीय, उसकी सुंदरता है। जैसा नाम वैसा ही रंगरूप। शायद इसीलिये उसका नाम रूपचांद पड़ा हो। सात साल होते-होते उसे पड़ोस के एक निजी नृत्य कला केन्द्र में दाखिला दे दिया गया। इससे उसका काम कार्य, दायित्व वगैरह दोहरा बढ़ गया। स्कूल की पढ़ाई। फिर नृत्य कला के अभ्यास भी चलते रहे।

लेकिन मानव शरीर कोई निर्जीव मशीन तो नहीं। हाँ, मशीन को भी तो आराम की जरूरत होती है। रूपचांद के छात्र जीवन में भी काम के बोझ से कसमसाहट पैदा होने लगा। उधर, प्रत्यक्ष रूप से शिक्षकों के ऊपर लटकने वाली जुल्म के तलवार तो अलग डरावना दिखती है। यह शिक्षा विदों, अभिभावकों तथा सरकार के बीच विचारणीय विषय हो सकता है कि शिक्षा की प्रकृति, प्रवृति कैसी हो? क्या हो? नरम या गरम? हमने गुरू मुखों से यह भी सुना है कि कर्ता को फल की चिंता किये वगैर कर्म पर जोर देना चाहिए। सवाल यह है कि देश की शिक्षा नीति कर्म का अनुशरण करे या बगैर परिश्रम फल का? प्रायः देखा जाता है कि विशेष सरकारी काम-कार्यों के अवसरों पर गुरू-जनों को, पठन-पाठन के बाहर-अतिरिक्त काम सम्पन्न करने को दिये जाते हैं। तब जाहिर सी बात है कि वे विद्यार्थियों को समुचित पढ़ाई का अवसर नहीं दे पाते हैं। और इसका बुरा नतीजा परीक्षा-फल पर पड़ता है। पर उधर किसी का ध्यान नहीं जाता। उन्हें तो बस स्कूल का रोशन होना चाहिये नैसर्गिक लाभ मिलना चाहिए। हर हाल में स्कूल का रिजल्ट अच्छा चाहिये वरना गुरू ही जिम्मेदार हैं। कोर्स का न पूरा हो पाना....सरकारी हुकुम की मार....नौकरी जाने का डर....। यही वह स्थिति है जहाँ गुरूजन क्रूर बन जाते हैं और अक्सर इस क्रूरता का ठीकरा विद्यार्थियों के माथे फोड़ा जाता है।

इस स्कूल में भी प्रधानाध्यापक का सख्त निर्देश है कि रिजल्ट अच्छा होना

चाहिये, अखबारों में हमारा नाम भी शुमार होना चाहिये.....वगैर...वगैरह.... । जाहिर है इस फरमान का असर निचले स्तर से ही पड़ेगा। इसका नतीजा यह हुआ कि अब रूपचाँद को भी होमवर्क न बना पाने की डाँट मिलती रही।

रूपचाँद की माँ आगे बताती है कि उस दिन रविवार का दिन था। नृत्य कला केन्द्र में कुछ विशेष कार्यक्रम का आयोजन था। कार्यक्रम दे कर गये रात थका-मंदा वह घर आई और खा-पी कर सो गई। स्कूल का होमवर्क छूट गया। कल तो सबेरे ही स्कूल जाना है। रूपचाँद का क्लास टीचर के साथ सामना होता है -

क्लास टीचर-लाओ होम वर्क।

रूपचाँद, मेडम...मेडम...नहीं बना पाई।

क्लास टीचर, क्यूँ?

रूपचाँद, रात को थक कर आई और जल्दी सो गई। इसलिये.... ।

क्लास टीचर - थक कर! रात को कहीं चरने जाती हो क्या?

रूपचाँद - मेडम पड़ोस में डांस सीखने जाती हूँ।

टीचर - ओ हो, समझ गई। तुम इस स्कूल में पढ़ने लायक छात्रा नहीं हो। अब खूब नाचो, गाओ और शादी-वुदी रचा कर दामाद बाबू के साथ घर बसाओ हाँ, आज मैं टीचर नहीं, वो...वो सूर्य भगवान है। जा, वहाँ तब तक खड़ी रहो जब तक मैं फिर से तुम्हें नहीं बुला लाती। समझी? यह तुम्हारा आखरी चांस है, हाँ।

यहाँ के बच्चे बताते हैं कि यह लड़की कोई घंटे भर खड़ी रहने के बाद बेहोश हो कर गिर पड़ी। हमें इसकी खबर दी गई। पड़ोसी होने के नाते मैं भी दौड़े चली आई। और अब हम राज्य के एक नामी सरकारी अस्पताल में हैं। मैं इस अस्पताल का नाम लेना नहीं चाहूँगी। पर हाँ, इसे डाक्टरों, मरीजों तथा स्वजन परिजनों के बीच झगड़े का अखाड़ा कहने में मुझे कोई शर्म नहीं। खैर, सीरियस केस होने के नाते भर्ती तो हो गई। पर उसके नसीब में विस्तर नहीं लिखा था। इस दम्पति को इतना हैसियत भी नहीं थी कि दूसरे किसी निजी अस्पताल में बच्ची को ले जाए। भेंन-भेंनाते स्वजनों और मरीजों के बीच बराम्दे पर ही बच्ची को सुला दिया गया। फिर पता चला कि जुनियर डाक्टर और सफाई कर्मचारी हड़ताल पर चले गये हैं। चेकअप साफ-सफाई का काम अस्त-व्यस्त है। दुर्गन्ध चरम सीमा पर है।

हम डाक्टरों की खोज में दौड़-भाग करने लगे। ओह, भाग्य का मारा यह बच्ची! जब हम डाक्टर ले कर लौट आये तो बच्ची का प्राण पखेरू उड़ कर कहीं दूर

गगन पर निकल चुका था।

हाय शिक्षा...शिक्षा....शिक्षा... ।आखिर शिक्षा है क्या बला? शिक्षा की प्रवृति कैसी हो? शिक्षा का अभिप्राय क्या है? ओह! शिक्षा की प्रवृति न्याय परोपकार ही तो है। शिक्षा का अभिप्राय निः स्वार्थ सेवा ही तो है। पर इस बच्ची के नसीब में न्याय नहीं लिखा था। अच्छे फल की चाहत में, अच्छे कर्म की अवहेलना किया जाने का सटीक सजा इस होनहार बच्ची को मिली। हे नीति निर्धारकों, दिल को मत किल करो.....सटीक सोच रखो। बस जहन्नुम से जन्नत पाने में कोई देर नहीं, मेरा शोकाकुल मन अन्दर ही अन्दर, दहाड़ मारने लगा।

रूपचाँद की माँ जब बच्ची को सपने में देखने की बात चलाई तो मैंने उसे अपने तरीके से समझा कि यह सब तो महज क्षणिक नयन सुख ही है। सपनों के खण्डहर के किसी कोने पर टूटा मकड़जाल ही है। इसी के साथ, मन ही मन, बच्ची की दिवंगत आत्मा को शान्ति पहुँचाने के लिये अपने अल्लाह से मिन्नत माँग ली।

=o=o=o=

5. पुतम

आईञाः हिसाब ते नेया कोई काजी कानी दो का, आईञाः जीबोन राः दुकु काजि कोगे तानाः।

हे, ने वर्णिका आईञाः जीवोन राः दुकु काजि कोगे तानाः हाले को। आईञाः। जीवोन राः दुकु काजि को तानाः ओकोआ कोचि का काजि ले भारी दो जी गे काए मानतिंग ताना।

मेन्दो नेया राः कानाजि जोनोका रे आईंञ के सुकु सुकु जाःईञा बु मेन लेया। चानाः दुकु रे सुकु बानोः? आईञाः बुझाव नेका मेनाः चि ने सुकु रासिका रेगे ने दुकु राः रानु मेनागा। कवि कानीकार को, ओलोल को ने सुकु राः चलते गे जुगु-जुगु सेसेन राः पोथा को ओड़ोः उडुः हुनर जामा कान कविता, कानी ओड़ोः जिलिंग-जिलिंग उपन्यास कोको ओल दाड़िया ताना। यदि सारतेईञ काजि रेदो, आईञ जाः जान कवि कथाकार रेदो होनंग ने पुतमः चेतान रे सौ-सौ कविता आर दुरंग कोईंञ बाई केद तेयाः।

मेन्दो दुकु-उडुः राः काजि, आईं कोई कवि-उवि का तानिः। नागे ओलोल, कानीकार। आईं दो चासा-बासा निःयाः किंसाड़ाः होन्डो होनः तानिः। आईञा नागेन दो हातु-कातु गे दिसुम ताना। चेंणे-चिपरूप कोआ बोली-चली कोआ तेगे भाषा-बोली ले इतु जादा। हिसिर पुतम कुरू...कुरूद...कुरूद....आईञाः आलाय-बलाय तान जी ने पुतम केः कुलि जाःईया हे पुतम रानी आम होटोः रे गोनों आन चांदी राः मालातेम माला काना। इमिन रेव गोटा सिंगि कुरूद...कुरूदेम राः बेड़ा कान ताईना। चाना ओमोगे आईं लेकाम दुकु ताना?

मेन्दो इनिः ने जागार को का आईउम गेः बाईना आर नेका रोज राः कान गे ताईना। तोबे इमतांग आईञाः जी उड़ः ते लागा गिड़िवोः तान ताई केना। इदु ड़ोः चानाः मेन्ते धन-सम्पति ताई कोआ तेव जी रे चिलका ते दुकु आटकारोवा? हे, आईं काजि लाः चि आईं किसाड़ा कोआः होन तानिः। आलेयाः ओड़ोः चिकान कामि मेनाः? चासा-बासा, सिऊः कामि। मेला-ठेला पीट-पालान सेनोः बेड़ा। ओड़ोः हातु तेनेबाः रे सरजोम साकाम राः पुडुः रे इलि नू, बस। मेन्दो हे शहर रेन बाबू को आले ने इलि आरखी नू तान को डोन्डो आलोपे। हिसाब लेया। आईं मानातिंग ताना चि

आले हातु होड़ो कोआः उड़ुः विचार खाँटी मेनाः याने खांटी भारतीय मेनाः लेया। एकदम गंगोत्री गंगा राः दाः लेका तेता। चियाः आले आपेयाः भाषा रेगे ले आईउम तादा चि भारत दिसुम दो हातु कोरे बासावा काना। छिः छिः आले रेडियों कोरे ले आईउम जादा मुम्बई शहर रे मियाद सत्तर पारोम हड़म चालीसवाँ मुंदिल ओड़ाः तेः कुड़िल हाड़ागु केया तेः गोएन जाना। मैट्रिक, आई-आई टी. रेन होन होस्टेल रे पंखा रेः फसे गोए जाना। हाड़म बुड़िया होन कोआः जी होन गेदो तानाः। चानाः जारूडु ताई केना गोगोएन राः? आईउमोः ताना चि एन हाड़ामाः बुड़िया पुराः सिदा रेः बागे किया। इनियाः मियाद गे कोड़ा होन दुबई रे आएयाः कुड़ी ते लोः गुल छरे माराव जादा। गठरी का गठरी आपु ते टाकाए कुलाई ताना। ओह टाका चेतान रे दुलाड़ा-सिविल कोताः ओला काना, दुनिया रेन हागा मिसि को? इनिः एसेकर गेः ताई केना। मायांग-भुईउग के आंटकार जाद ताई केना। एना मेन्ते इनिः दुबई ते सेनोः तान ताई केना आयाः होन कोड़ाः काटा साब!

नातेवो गे, एन आई. आई. टी. होन कोआः आयार से सामुदर मेनाः। ताएयोम रे हांगी। सेनोः रेदो कोते को सेने? एंगा-आपु कोआ टुटु पुंजीया कमाई राः टाका को हासाव राः बोरो आर हुड़िंग नम्बर हिजुः जान राः खाएराव। ओड़ोः आकोआः सोंगे को आयार जान राः हिसिंगा। नेः नेकानाः कोगे इनुकुयाः गोएन राः होरा कोदो बाई जाना। निकु जीवोन राः होरा रे ताएयोमे जान राः उड़ुः हिजुः जाना। मेन्दो ने दुकु राः रानु का नामोगा मेने काजि बानोगा। ने पुतम रानी आलेः उदुबा ले ताना चि जीबोन दुकुतान रेव सुकु रासिका राः लुतुम तानाः।

ए हाड़ाम ने पुतम रानी ताः ते इतुजोम में। ए होन को ठीक उड़ुः आर जोर जुलुम कामि ते आपेयाद उड़ुः रोग को हारगिड़ि पे। आलेयाः जाँ कुड़ी सोंगे बंकुआ। कोड़ा सोंगे को बांकुआ। कुड़ी सोंगे मेनाई रेदो हिनिः राः जाका माका चंण्डुः। कोड़ा सोंगे मेनाई रेदो हिनिः सेंगेल दाः गामा तान सिंगि। इनकिंग जब आयार तेकिंग सेन जादा तोबे आले ताएवोम तेले उसारेन ताना। आले हाईउरेन ताना। अकाल या बाड़ी कोआ ते चासा बासा बर्बादोः ताना। ओड़ा-दुआर, ओते आड़ी सोबेन आतुः ताना। आड़ी को ओदोः तान। तोबे आले ले गोएन ताना। आलेयाः रिमिल तुरूब ओड़ाः को बानोः। आर नागे दुबई अमीरात रे जाँ कामिया होन कोड़ा को मेनाः कोआ। आले दो गुईउ रेले ताईन ताना। एना मेन्ते आले गुईउ कोरे गेले गोएन ताना।

मेन्दो ने पुतम रानीयाः मेद रे इकिरान समुद्राईञ लेल नाम जादा। आलेयाः जीवोन राः गाड़ा ने मुलि गे लिंगि आउ ताना। नेका नाः ते का। ओको इम तांगआते आईञाः सेंणा बोलो जाना। ओको इमतांगआते नायाल समवाड़वोईंग इतु केदा। गोड़ा-पीड़ी, आड़ी-चिमि कोरे मुरूद हेसाः मदुकम दारू को मापा रंग मापारंग सालंगि-सालंगि तिंगुआ काना। इम तांगआते। ओड़ो आयार को तिंगुआ कान ताईना जुगु-जुगु जाकेद। ने दारू-कोराः कोतो कोरे, सुड़ा संगेन इमताग आते नाः जाकेद पुतम रानीयाः ने रानाः गेईञ आईउमाउ जादा हिसिर पुरन्द कुरूद-कुरूद.. कुरूद...।

सिउः तान रे जी आलाय-बालाय तान रिकावगा - ओह आईञाः जीनीद रे चिमिउगे पुतम को हिजुः लेना आर को रूड़ा जाना। मेन्दो ने रानाः इनकुआः का गोएवोः लेका ताई गिड़ि जाना। जीवोन रे जीवोन उकुआ कान सेन होरा होड़ो। आम के ओकोआ लुतुम तेईंञ राः मा? हान्ते, आईञाः आड़िसा ओड़ोः गुसुडु हाड़ा किंगव गे आईञाः उडुः विचार रे डुम्बुईया कान किंग आगाम जाःईया। आर एन लोः गे किंग तिंगुन जाना। एन लोः गे ओड़ोः आई होश रेईंञ हिजुः रूड़ाः। आर आचका गे रोड़ लाचोवा ते काकला उडुंगवोः..दोला..रे दोला..लाठा..बन्डा..दोला..। नायाल लोः दोला....।

एन लोः दो मुरूद दारू कोआ ते आसरायानरूईउद हिजुः ताना-हिसिर पुतम कुरूद...कुरूद....कुरूद...।

माने आईंग आतिंग का...आम ओते रे चिमतांग जंगएम हिरिःया?

पुतम रानी आईंग केः आगाम रिका जाःईया चि आसरय लेकान दाः तेगे जीवोन पाटव ताना ताबु।

=o=o=o=

हिन्दी

5. पाँड़की

मेरे हिसाब से यह कहानी नहीं वरन् अपने ही जीवन की आंतरिक वेदना है। हाँ, यह दास्तान मेरे जीवन का आन्तरिक वेदना है, यारों। मेरे जीवन का आंतरिक दर्द है जो व्यक्त किये बिना मेरा अनाड़ी मन है कि मानता ही नहीं।

लेकिन इस व्यक्त करने के क्रम में मुझे खुशी का अनुभव भी हो रहा है। क्यों गम में खुशी का स्थान नहीं? मेरा मानना है कि यही खुशी इस मर्ज की दवा भी है। कवि, कथाकार, लेखक इसी खुशी के मारे कालजयी, भावपूर्ण कविता रचते हैं, कहानी, उपन्यास लिखते हैं। सच कहूँ अगर मैं कोई कवि, कथाकार होता तो इस पाँड़की पर सैकड़ों गीत, कविता रच डालता।

पर अफसोस! मैं कोई कवि-उवि नहीं, न लेखक, कथाकार। मैं तो खेती-किसानी करने वाला एक किसान का अंनपढ़ बेटा हूँ। मेरा तो गाँव ही देश है। हम गाँव वाले झरने के झरझराहट में ही कविता सुनते हैं। पशु-पक्षियों की बोली से ही भाषा सीखतें हैं। हिसिर पुतम कुरूद...कुरूद...कुरूद...।

मेरा उदास मन इस पाँड़की से पूछता है - हे पाँड़की रानी तू गले पर चाँदी का वेश्कीमती कंठा हार पहिनी हो फिर भी इस तरह कुरूद-कुरूद (रह रह कर दर्द का व्यक्त करना) रोती रहती हो। क्या तुम में भी आनन्द की कमी है?

पर वह मेरी इन बातों को अनसुनी कर जाती, और रोती रहती। तब मेरा मन दुखी हो उठता है। आखिर सम्पति बैभव के रहते भी जीवन क्यों दुखी रहता है? हाँ, मैंने कहा कि मैं किसान का बेटा हूँ। हमारा क्या काम है? खेती-किसानी करना। मेला-ठेला, हाट-बाजार जाना फिर गाँव के पहुँचा-पहुँची में साल पत्ते के दोने में सोम रस से प्रेम जोड़ना, बस। पर हे शहर के बाबूजन, इस सोम रस से प्रेम जोड़कर हमें वेवकूफ न समझना। मैं मानता हूँ कि हम गाँव वालों का सोच-विचार खाँटी रूप में है। याने खाँटी भारतीय है। एकदम गंगोत्री के पानी की तरह निर्मल शुद्ध, स्वच्छ। क्यों कि आप के ही भाषा में हम जानते हैं कि भारत गाँव में बसता है। छिःछिः, रेडियो में हम सुनते हैं कि मुम्बई में चालीसवाँ तल्ले से एक सत्तर पार बुढ़ा कूद कर अपना जीवन लीला समाप्त कर जाता है। मैट्रिक, आई.आई.टी. के छोरा-छोरी हॉस्टेल में पंखों के साथ शान्ति की अनन्त दुनिया में उड़ चलती है। बूढ़े

बच्चे और कन्याओं के कोमल हृदय ही तो हैं। ओह! क्या वजह है इन कोमल हृदय में आघात पहुँचने का?

सुना है उस बूढ़े की बुढ़िया वर्षों पहले उसे छोड़ गयी है। उसका एकलौता कमाउ इंजिनियर बेटा दुबई में अपनी पत्नी के साथ गुलछरे मार रहा है। गठरी के गठरी बूढ़े बाप को नोट भेजे जा रहा है। उफ! रूपिया में नेह-छोह कहाँ लिखा है, दुनिया वालों! उसे अकेलेपन का दर्द है। सो वो चला था दुबई को दम भरने। बेटा का पवित्र पांव छूने।

इधर इन बच्चों के आगे समन्दर है पीछे खाई। वे जाएँ तो जाएँ कहाँ? माता-पिताओं के गाढ़ी कमाई के पैसों का गल जाना और पढ़ाई में कम नम्बर आना। फिर अपने-अपने फ्रेंड, बोएज फ्रेंड के आगे निकल जाने का दुख। यही कुछ उनकी आत्मघाती समस्याएँ हैं। इन्हें जीवन में विफलता का दर्द है। पर यह रोग लाईलाज नहीं। पाँड़की रानी हमें बताती है कि जीवन में विफलता का दर्द है। पर यह रोग लाईलाज नहीं। पाँड़की रानी हमें बताती है कि जीवन तो दर्द में भी हँसने का नाम है। ए बुडढे इस पाँड़की से सबक ले। ऐ बच्चे सटीक सोच और कठिन परिश्रम से खुद का इलाज तो करो। हमारा कोई गर्ल फ्रेंड नहीं, बॉएज फ्रेंड नहीं। गर्ल फ्रेंड है तो वो पानी बरसता चांद है। बोएज फ्रेंड है तो वो आग बरसता सूरज। वे जब हम से आगे निकलते हैं तब हम पीके रह जाते हैं। हम विफल हो जाते हैं। अनवृष्टि अति वृष्टि से फसल मारी जाती है, घर, द्वार, खेत-बारी बह जाते हैं, मेंड़े टूट जाती हैं। तब हम आत्म हत्या कर जाते हैं। हमारे पास गगन चुम्बी अटालिकाएँ नहीं हैं। और न ही दुबई अमीरात में कोई कमाउ औलाद। इसलिये हम चल्लीसवाँ तल्लें के, दुबई-अमीरात उड़ सकने के बदनसीबी भी हैं। हम कुटिया बासी हैं। इसलिये हम कुटिया में ही कट जाते हैं।

लेकिन मुझे इस पाँड़की रानी के आसुओं में अथाह समन्दर दिखता है। हमारा जीवन-प्रवाह इसी समन्दर की ओर उन्मुक्त दीखता है। यह नजारा आज से नहीं, जब से होश सम्हाला तब से। जब से हल का मुठ सम्हाला तब से। दोन-टाँड़ के मेड़ों पर प्लास, पीपल, महुआ के विशाल-विशाल वृक्ष खड़े हैं। तब से आज तक और आगे भी खड़े रहेंगे, सहस्त्र दिनों तक। इन पेड़ों की फुंगियों, डालियों पर तब से आज तक पाँड़की रानी का यही रोना सुनता आ रहा हूँ हिसिर पुतुम कुरूद...कुरूद. ..कुरूद...।

हल चलाते वक्त मन आंदोलित हो उठता है – मेरे जीते-जी कितने ही पाँड़की आयीं-गईं। यह उनका क्रान्दन अमर बन कर रह गया। जीवन रे जीवन गुमनाम राही! तुझको किस नाम से पुकारू?

उधर, मेरे जोते, लाठा और बन्डा (बैल) विचार-अग्नि में गलते मेरे दिल को माँप जाते हैं और नजायज फैदा उठाते हुए धम से रूक जाते हैं। तब मेरा होश लौट के मेरे मगज को आता है और सहसा ही मरियल होटों से बड़बड़ाने लगता हूँ चल रे चल। आगे चल। हल के साथ चल...। इतने में पलास की डालियों पर से आशा भरी विराट क्रान्दन आता है – हिसिर पुतम कुरूद...कुरूद...कुरूद...।

याने मैं चुगूँ, खेत में दाना कब गिरेगा? पाँड़की रानी मुझे एहसास दे जाती है कि आशा रूपी जल से ही जीवन सिंचित होती है।

=o=o=o=

6. आईञः हातु आईञः दिसुम

हे सारतेगे, आईञाः दिसुम आईञा हातु। ओको रे मेनाः आईञाः हातु? चानाः नागेन लुतुमा काना ने हातु? आपे चियाः मेन्ते ने डोन्डो होड़ोआः काजि पे आईउम? दिल्ली राः चांदनी चौक राः दोकान ओड़ाः कोरे होनोर तान कोरे, कोवलम राः समुद्र गितिल रे सेन बेड़ा जाद लोः, मुम्बई सी लिंक राः रेलिंग रे टेन्डेरा कान लोः आपेआः चुल बुल जी जाः नेका गेः उडुः विचार जादा।

मेन्दो आपे जाः बु मेन लेया होसोड़ो रे मेनाः पेया। आईञाः ओड़ाःव गे आपेयाः मारंग दिसुम भारत रेगे मेनाः। हे, नेया जरूड़ु मेनाः आले भारत के मारंग काले मेताः। आले भारत बारि ले मेताः। मारंग राः मानेव ठीक लेका काले इतुआना। आले दो ने भारत रेगे पीठ-पालान नसीब मेनाः, गुईउ-माचा नसीब मेनाः लिजाः किचिरि नसीब मेनाः लाद-रापाः उरिः मेरोम कोआः नसीब मेनाः जीनीद-गोनोए राः नसीब मेनाः....। एना मेन्तेव आले आलेयाः गे दिसुम गेले मेताः। तोबे आपे मापारंग दोकान कोआ ते कोवलम आतोम कोआते, समुद्र चेतन पाचिरि लेकान लहर को चेताना ते, सी लिंक राः खुंटा कोआ ते आले हातु लेल पे सानांगआ? आर चिमिन बादिलि जाना दिसुम राः चेहरा हाले को। का आईञ साः ते हुड़िग गलती जान लेका आटकारोः ताना। आईञ आपे के हालेईञ मेताः पेया। जब आले केदो डोन्डो कोगे पे मेता लेया। नेया नागेन आले खूब दुकु ले आटकारेया। आले आटकारेया चि ओको हुलांग आले आर आपे सोंगे-सोंगति बुताईन जाना एन हुलांग आ ते आलेया दुकु चाबाव़ागा। आलेयाः आर आपेया दिसुम ताला रे बाराकाईती राः गंगा गाड़ा लिंगिवोगा। अच्छा, आईञ पुराः काजि बाई होड़ो दो का तानिः। मगर ने लोलो रेगे आपे के मियाद बाबुआईनाः फोन हिजुः लेना हल्लु...... हल्लु.....अरे भई बारिया आपिया कानी को कुलाईञ में ए...ए...ए...। जि जि जि सर कुला मेयाईञ सर कुला मेयाईञ....ञ....ञ - आईञ काजि रूड़ा केदा।

हे कानी कुल मेन ते दोईञ काजियाःईया। नाः दो बोरो तेदोईञ गोएवोः ताना। होड़ोमो रे माएवोम गे आंजेद जाना। फोन रे केटे यान गे जागर ताई केना। एना मेन्ते जी रे दुकुर-जुकुर दो हिजुः गेया। आर फोन हिजुः सोमय? मेने पे जी राः आकाल-वाकाल आर बा चान्डुः मुलुः राः रासिका आलाय-बालाय लेका गे।

आईञाः हातु बिर भीतर पाड़ा रे मेनाः। हातु आते बोः कान्दुड़ी साः रे मियाद टुंगरी मेनाः। झूँड़ कोआ ते संगिन नोः रे एसेगर गे, मियाद सापेल दीरी चालपा के रेद कोते पाटुड़ीं ताः ई मारांग लेकान लेपालाड़ी हेसाः दारू ओते लो साब दाड़िया काना। टुंगरी लातार रे गाड़ा लिंगि ताना। एन कोरे कोताः कोताः डोबा को मेनाः बाड़ाः। बिर कोरे हाटी-कुटी बिर दारू को मेनाः बेड़ाः। एन कोरे चेंणें चिपरूप को आपिर बेड़ा ताना। ओते रे तासाद रूड़ाः....मुई...तीजु को होनोर ताना। हाटी-कुटी रंगा तेन पमपलद को आपिर बेड़ा ताना। ओड़ोः माड़ी-माड़ी लिंगी तान बा सोआन होएवो....आर जी दो ताईन उडुः हुनर कोते आलाय-बालाय ताना, हाले को। आर एनका चिलका ते का होबावगा? आपेयाः समुद्र राः पाचिरि लेका कुड़ाउ तान तुतुकुन दाः आर आलेयाः लो तान दीरी हुटुब कोराः होएव चानाः मिद लेका गेया? काजि दो चोपोट गेया का! तुतुकुन आर लोलो, जेटे आर उम्बुल, सुकु आर दुकु ठीक आर का ठीक...। सुकु-रासिका राः रूतु ओरोंग तान आपे बाबू बाबुआईन को जाः नेकान काजि कोराः बानगी कापे इतुआना। नेकान नेकान चीज को बाई किनिः आलेया दिबि आलेः उदुबा काः लेया चि नेया को सोबेन मिद रोकोम गेया। मेन्दो आपे एना को भोगावए होड़ो को बिनगा-बिनगा मेनाः पेया। ओकोए दुकु तान रे ओकोए सुकु रिया। ओको ए सुकु तान ओकोए दुकु रिया। ओकोए जेटेः सुकु ताना ओकोए उम्बुलेः दांडा ताना। आकोए उम्बुल री रे ओकोए जेटः दांडा ताना..। ठीक रेगे का ठीक। काठीक रेगे ठीक...।

हे काजि जाः उल्टा ते सेनोः ताना। आईञ बा चन्डुः रासिका राःईञ जागार ताई केना। हे, हातु रे सोबेन होड़ो कामि को नामे का भारत सरकाराः ने बुगिन सुगाड़ा जागार रे आले भोरसा काले नामे। मगर एयर टेल फोन राः हवावाण ने बिर भीतर रेव लुतुर रे तेबा तान ताई केना। नाः ओकोन सोमय बाबुआईनाः मोबाईल रेईञ जागार तान नाई केना एन सोमय ने हेसाः दारू सुबा रेगेईञ दुबा कान ताई-केना। जापाः कोरे गे बन्डा डुन्डी, जुम्बुडी शैतान उरिः को बुरूमा कान लोः को लिजुम ताना। रानी सीता पगली, लाडली पुटुस झूँड़ राः साकाम को राचाः ताना। आईञा मेद जापाः रे संगिन-संगिन जाकेद लिबि लिबि बा सोकन हेएको राः पैला बिजिर बालांग ओटंग ताना। आर एन कोरे मुरूद बा राः सासंग छापा बारू सुडा राः आराः छापा लागाबा काना। आईञ ओकांए तानिः? नाः दोपे ठोर किःञा जाः। उरि गुपि सिटिया। याने मियाद डोन्डो होड़ोवाः ती रे मोबाईल। काजिया को ने हेसाः दारू

मिद हजार साल पुराना दारू ताना:। पुरना कोतो को, मगर नावा सुड़ा साकाम। कोता-कोता: कोरे रोड़ जान कोतो को रिपिया रिपिया काना। आलेया: विर दिवि मेता लेया-आपेव ने हेसा: दारू लेका गे जी देन पे। पुरना होपोंगा मोचा कोआ ते नावा जागर को उड़ुंग में। आर मुसिंग दिन ने हेसा: दारू लेका गे सोबेन इमतांग नागेन आईञा: हेबे हातार रे दुड़ुम हापे पे। आर जेतना: आलोपे उड़ुगा.....। हजार बोछोर लेला काद ने हेसा दारू...आबुआ: जनम-जनम जाकेद साते रे ताईन ने हेसा: दारू। हाड़ाम को काजिआउईया, चिमिनुंग गे ने हेसा: दारू-बुटा रे दुब केया ते दुरंग को को ओल केदा। चिमिनुग गे नावा-नावा कोन्या को आकोआ: सुकु सोमय नागेन ने दारू ता: तेको आर्जी बिनती केना। चिमिनुंग गे जेटे ते सेर तान होड़ो को नेरे को उम्बुलेन जाना। चिमियुग गे बन्डा, डुन्डी, लाठा, सीता, पगली लेकान उरि: गाई को ने दारू सुबा रेको लिजुम केना। ओड़ो: गे चिमिउग गे सोंगति पिरिति को आकोआ: जी रा: जागार ने हेसा: साकाम रेको ओल ला:। चिलका दो मियाद दुरंग आईउमे पे -

निदादोरेईञ कुम मेय:
सिंगि दोरेईञ दांणा मेया
गति रे हेसा: साकाम चिटि कुले में।

मेन्दो एन बाबुआईन जेतान कानी कोन्तारी काईगं ओल कुल दाड़ियाईया। जी जी रेगे खूबिंग दुकु जाना। ने हेसा: दारू उम्बुल गे आईञा: नागेन दो जेटे काल-काल बाई जाना। ने हेसा: साकामो गे आईजा: नागेन दो रोड़-रोदोद रापुद जाना। होएवो वाण ते सेसेन तान गोटा दिसुम रे भला ने हेसा: साकाम कोते दोपालि आदो ताना ओकाए इतुआना?

=o=o=o=

हिन्दी

6. मेरा गाँव मेरा देस

जी हाँ, मेरा गाँव मेरा देस! कहाँ होगा मेरा गाँव? क्या खासियत है इस गाँव में? आप क्यों सुनें इस गंवार की बातें? दिल्ली के चाँदनी चौक के मॉलों में, कोवलम के रेत पर चहल कदमी करते हुए, कन्या कुमारी के महाजल संगम स्थल पर मुम्बई-सीलिंक के रेलिंग पर पीठ अटकाए आप के चुलबुल मन यही कुछ सोच-विचारते होंगे!

लेकिन नहीं, आप गलतफहमी में हैं। मेरा गाँव भी आप का महान देस भारत में ही है। हाँ, इतना जरूर है कि हम गाँव वाले इसे महान नहीं कहते। हम सिर्फ देस कहते हैं। महान का अर्थ भी हमें ठीक से मालूम नहीं। हमें तो इसी देस में हाट-बाजार नसीब है, झोपड़ी-जूठन नसीब है। लुगा-फटा नसीब है, रोटी दाल.... गाय-गोबर नसीब है....जीवन-मरण नसीब है। इसलिये ये ही हम अपनी दुनिया को देस की कहते हैं। तो आप मॉलों के मुड़ेरों से, कोवलम के कूल-किनारों से, समंदर की उतुंग लहरों से सीलिंक के स्तम्भों से, मेरे गाँव का नजारा देखना चाहेंगे? आह कितना बदल गया हैं देस का भेष, यारों! मुझसे कुछ चूक हो गई लगती है। मैंने आप लोगों को यार कहा जो! जब कि आप हमें गंवार ही कहते हैं। इसका हमें घोर दुख है। हमें लगता है कि जिस दिन हम-आप यार-वियर हो जायेंगे, उस दिन से हमारा दुख दूर हो जायेगा। हमारे देस आप के देस के बीच बरकत की गंगा बहेगी.। खैर जो हो, मुझे बात बनाने की बुरी आदत तो है नहीं। मगर इसी दरमियान आप को एक सच्ची बात बता रहा हूँ। एक दिन दिल्ली शहर से एक बाबुआईन का मोबाईल कॉल आया। हल्लू...हल्लू...हल्लू अरे भई दो-तीन कहानियाँ मेरे पते पर भेज देना...आ...आ...आ...आ...।

जि...जि...जी...जी...सर...स....सर भेज दूँगा – मैंने उत्तर में कहा।

जवाब में कह तो दिया। अब मुझे काटो तो खून नहीं। मुझे काठ मार गया। फोन में जोरदार वाक्य थे सो मेरे मन में कुछ-कुछ तो जरूर होने लगा था। और फोन आने समय? मन का कुलबुलाना और बसंतागमन का आकुलाहट एक जैसा समझें।

मेरा गाँव जंगल पहाड़ों के ऊपर फैले विस्तृत समतल जगह पर बसा है।

गाँव के उत्तर में एक टीला है। झाड़ी-झुरमटों से दूर अकेला, एक समतल पत्थर को मिट्टी के साथ जकड़े एक विशाल पीपल का पेड़ खड़ा है। टीले के नीचे छिट-पुट जलाशयों के साथ पहाड़ी नाले....जंगल में विभिन्न तरह के पेड़ पौधे...लता...लरंग...घास..पात....डालियों पर चहकते फुदकते रंग-बिरंगीपक्षी...रेंगते कीड़े-मकोड़े..उड़ती फिरती रंग-विरंगी तितलियाँ..और मंद-मंद बहता बसंती बयार...। आह! मन भावुक हो उठा है, यारो! हो भी क्यों न हो? आपकी ठंडी उतुंग लहरें और हमारी जलती चट्टानी हवाएँ, क्या एक समान है? बात है न मजेदार! ठंडा-गर्म, धूप-छांव, सुख-दुख, न्याय-अन्याय...। चैन की बंसी बजाने वाले आप बाबु-बाबुआईनों को शायद इनके बीच फासला का अंदाजा न हो। मेरी प्रकृति देवी ने हमें बताया है मेरे लिये ये सब एक ही है। मगर तुम भोग्य के लिये सब अलग-अलग है। कहा है कि अन्याय के बिना न्याय का मजा नहीं। दुख के बिना सुख का मजा नहीं। धूप के बिना छांव का मजा नहीं। बात उल्टी दिशा में जा रही है शायद!

मैं बसंत बयार की बात कर रहा था। हाँ, "गाँव के हर हाथ को काम" - भारत सरकार के यह सुपरिचित और कर्ण-प्रिय जुलमा भले ही हमें दूर का ढोल लगे। मगर एयर टेल का हवाबाण इस बीहड़ जंगल में भी अचूक निशाना साध रहा था। अभी जिस समय बाबुआईन पर मोबाईल से बात कर रहा था उस समय टीले पर के इसी पीपल वृक्ष के तले सुस्ता रहा था। सामने बन्डा, डुन्डी, लालची बदमाश बैठे-बैठे पागुर जमा रहे थे। रानी, सीता, पगली, लाडली पुटुस की झाड़ी चट कर जा रही थीं। मेरी आँखों के सामने दूर-दूर तक वन देवी की आंचल मंद-मंद बसंत बयार में लहर-लहर-लहरा रही थी। जिस पर प्लास के पीले छीटे लगे हैं, साथ में कुसुम के कोमल-कोमल नव पल्लव के लाल छींटे भी जुड़े हैं। मैं क्या हूँ अब आपने समझ लिया होगा। चरवाह! याने एक गंवार चरवाहा के हाथों मोबाईल! कहते हैं यह पीपल का पेड़ एक हजार साल पुराना है। पुरानी डालें मगर नई कोपलें। कहीं-कहीं ठून्ट सूखे वृद्धांग। हमारी वन देवी कहा करती है - तुम भी इस पीपल की तरह जीना सीखो। पुराना पोपला मुंह से नई बातें निकालो और एक दिन सूखे ठून्ट वृद्धांग बन कर सदा के लिये मेरी गोद में सो जाना, कोई गम न करना....। हजार बसंत का देखा पीपल! हमारा जनम-जनम का साथ निभाने को खड़ा पीपल! बड़े-बुजुर्ग कहा करते हैं कितने ही कवि-कथाकार इस वृक्ष तले बैठ कर कथा कविता रचे। कितने ही धूप से जलते राहगीर शीतल छांव में सांस लिये। कितने ही बन्डा, डुन्डी, सीता, पगली, पागुर जमायी। कितने ही प्रेमी जुगल अपने दिल के अरमान

अजमाए.... ।

मुझे उनमें से एक टुकड़ा याद है –

निदा दोरेईंड़ कुमु मेया,
सिंगि दोरेईंड़ दाणाँ मेया
गतिंड़ रे हेसाः साकाम चिटि कुले में।

अर्थात मैं तुमको रात में सपने में देखता हूँ दिन को खोजता फिरता हूँ पर पाता नहीं। हे प्रिये! कम से कम पीपल के पत्ते पर चिट्ठी तो लिखा करो।

लेकिन, उस बाबुआईन को कोई कथा-कहानी नहीं भेज सका। इसके लिए घोर आत्मग्लानि हुई। मेरे लिए तो इस पीपल के शीतल छाया भी जलाने वाली रही। ये पीपल के पत्ते भी मेरे लिये तो सूखे जर्जर हो गयीं। ओह! हवा से काम कार्य चलाने वाली इस दुनिया में भला यह पीपल की पत्ती कहाँ उड़े जा रही है, कौन जानें?

=o=o=o=

7. एयांगआः सोनाकाजि

मेद दाः जोरो केया तेः काजिया लिंग ताना – 'बिटि रे, बाबू रे सोना, दोला आबुआः दिसुम तेबु रूड़ाः।' आर सोबेन आलेयाः सिदा पुरना हातु तेले रूड़ा जाना। हे सारते गे। नि आईयाः एयांग। आईयाः माँ। नियाःओ गे आयाः एंगा – आपु को ताई केना। आयाः हागा-मिसि को ताई केना। कुमा-बारे को ताई केना... . । चिलका चि नाः आईआः एंगा-आपु मेनाः कोआ। हागा बारे मेनाः कोआ। निओ गे मुसिंग दिन आईञ लेका डिंडा-डंगुआ गेः ताईकेना। हाटिया दुड़ा रेः इनुंग केना। पीटी-पालान रेः होनोर बेड़ा केना। राचा-आखड़ा कोरेः सुसुन-दुरांग केना। हारा जानाए। माता जानाए। आंडान्दि-कोड़ान्दि जानाए। ओड़ाः-दुआर जानाए। तिसिंग आले आपिया होन कोआ' एयांग नि। दादा पिरितम मेनाःईया। बोकोईंग सागार आर आईञ सुगी। खूब माजा ओड़ाः दुआर सेसेन ताना ताले। जेतनाः राः घाटी-बाड़ी बानोः। ओते-आड़ी, गोड़ा-पीडी मेनाः। उरिः गाई को मेनाः कोआ। मेरोम-मिन्डी मेनाः कोआः। चेताना ते आबाः नुकुरी मेनाः। महीना चाबा जान लोःगे आबा टाकाए तोआबाउईया आर लान्दा तान लोः गे एयांग केः ओमोईया – नेःने माईना राः कामाई हाड़ाका रे दो ताम। एयांग मुरगुई मुरगुई लान्दा तान लोः ते टाकाए तेला केचि हाड़ाका रे चाबी कुरताः। एयांग पुराः काए पढ़ावा कान रेवो आबा केः काजि ताईया-होन को पढ़ाव लिचाव रेदो कालांग कुटु ना हेई। पैसा गे हाम्बुदा का रेदो कामि का बाईओगा। सेंणा-पेड़ेः का नामोगा। हाँ तारा लेका पैसा होन कोआः नागेन बैंक कोरे लांग जोगाव ताः। निमिन माजा सुकु-रासिका मेनाः ताले ओड़ाः रे। एयांग लान्दा-लान्दा लोः ए काजियाईञा-पढ़ावा कान बोर को काको नामोगा। आईंग लेका सोबेन दो नासीबान दो बांको। बेगार पढ़ाव ते भला नुकुरी बोर नामा काना। कापे लेल जाःईया आपेया आबा माईना का माईना टाका गे टाकाए तोआबाउ जादा।

दादा पिरितम संत जेविर कॉलेज राँची रेः पढ़ाव ताना। हॉस्टेल रेगेः ताईना। आलिंग बोको किंग नागेनोगे दादा खूब बुगिन। छुट्टी कोरे ओड़ाःए हिजुः रे आलिंगाः नागेन पेंट, साड़ी, फ्रॉक, जूता, चप्पल, कोए आगु तोरसाया। एनाव जान फुटपाथ कोराः कागे। फिराया लाल, बिगबाजार, विशाल, कोलकाता बाजार नेकान-नेकान मापा रंग दोकान कोआतेः आउवा लिंग। पंजाब स्वीट हाउस कोआ ते

मेटाईः आउवा लिंग। एना ते मोसा–मोसा आबा इनिः केः काचरा बाड़ाई–उलुई–पुलुई पैसा पुराः आलोम खरचाया बेटा। आबु दो रेंगे–राबांग मुण्डा होड़ो को। साहेब को लेका ताईन कोः रेदो कामि का चालावगा।

एयांग काजि केसेदी–हेमार आलोम एरांगई। साहेब कोआः कॉलेज रेम पढ़ाच जाःईया। साहेब को लेल–लेले ते भला काचिः इतु जादा? होन तालांग ऐः बाईओ ताना एना गे पातिया में।

दादा माजा लेका बी.ए. पास केदा। नाः आयार तेराः पढ़ाव नागेन एयांग – आबा ताकिंग जागार–जापागारेयाः मेनागा। मेन्दो, हान्ते विधियाः लेखा दो बिनगा गेः लेल इका जादा। आबाः कुड़ाम राः पुरना रोग ओड़ोः बिरिद रूड़ा ताना। मोसा होका ताना। मोसा बिरिद ताना। चिलका उमर सेनोः इदि ताना एनका रोग संगि इदि ताना।

मुसिंग सोबेन को ताला रे एयांग आबा के काजियाई ताना – इदु बाई आयार रे चानाः होबावगा, मोसाब ठीक काम ताईन। होन लांग बोर ताईया। चानाःम मेन जादा?

दुकुआते ओकोए मारांग ताना? आकादंदा रे टोआकान आबा काजि केदा–

'हे जाः ठीक गेम काजि जादा। तिसिंग वो गे माएवोम गेईंग उला लाः। आपे चिलका पे सानांग ताना एनका गे मार। बैंक रे हुडिंग लेका टाका जामा कानां। बोरो राः जेतान काजि का।'

आबाः मोचा ते ने लेकान बोरोआन जागार को आईउम केया ते आले सोबेन ले हायाद गिड़ि जाना। आर सारते गे। दादा आंडन्दि किः सिरमा आबा बागे केः लेया। आले होन को आपु तेले टुआर जाना। नाः दादा गे आपु बदला आपु लेका मेनाःईया। एयांग मेनाःई तेवो बू एयांग बदला एयांग लेका मेनाःईया। चिमिन सिरमा लेका ओड़ाः दुआर माजा गे सेसेनाउ जाना। मेन्दो बापुड़ि रान्डिया कान एयांग माता, कान सेंणा ते पेड़ेया कान होन चानाःए मेताई? दादा मुसिंग एयांग के मेताई ताना–एयांगा डोन्डो होड़ो को लेका हातु रे ताईन का माजा ताना। आबा जाँ चिमिन टाका कोए बागे तुका काःम रेदो चियाः का आबु राँची शहर रे ओते किरिंग केया ते ओड़ाः बु बाईया? एयांग मेन केदा–हे मार तोबे। हुड़िंग लेका टाका आपुम बागे तुका काईञा। ओते को तोबे लेल बेड़ाए में।

बार–आपि सिरमा ताएवोम ते राँची शहर रे मियाद बांग्लाले बाई केदा।

सुकु-सुकु हातु आते शहर तेले हिजुः जान। हातु राः सोबेन ओते-आड़ी, गोड़ा-पीड़ी को आध बाटाई हिसाब हातु रेन होड़ो कोले ओमाः कोआ। उरिः गाई ओड़ाः-दुआर को कुपुल होड़ो कोले जिमा तुकाः कोआ।

चिमिन सिरमा लेका माजा गे सेसेन आउ जाना। ओड़ाः रे इसिन बासांग कामी, माईंटी, पीटी पालान आले होन कोआः पढ़ाव लिखाव, किरिंग-खेजा सोबेन ठीक गे सेसेन आउ तान ताई केना। हे, ओड़ाः रे मारांग होड़ो हिसाब ते एयांग मोसा मोसा बू के लुन्डा बिन्डा इसिन बासांग कोराः को काजि बेड़ाईया। एन लेका गे, मुसिंग एयांग आर बू किंग कापाजि नोः जाना।

मुन्ना आड़ाः उतु रेदो गा किमिन काको सासांगएया। जाव गेईंग काजिया मेरेवो आमाः लुतुर रेगे का बोलो ताना। नेया भला चिलका जोमोगा? आंड़न्दिन जाना तेदो इसिन-बासांग कोगे इतुन लागा तिंगआ। खाली पढ़ाव बारी तेदो कामि का चालावगा।

किमिन ठुर-ठुर तान आया किसान ताः उदुबेः सेनोः तान लोः एयांग केः काजियाई ताना।

हे मार। आईञाः मान्डि-उतु का सिबिल तान रेदो बिनगा रे इसिने पे।

हानते पिरितमोगे नेया काजि कोए आईउम केद चि जी रेः रोः जाना। आर एंगा तेकेः हाड़द मोचा जाः ईया। जानाव-जानाव राः एपेरांग-सिपिगिद दोगा एयांग का जीलागोआ। किमिनाः मान्डि-उतु का सिबिल तान दो बिनगारे इसिने में।

एयांग आचोंड ते मेद दाःए गोसोः जाद लोःए काजियाई ताना।

हे मार। तारा साः ढाबा आड़ागा लेबेन। एन साः रेले ताई ना।

किमिन साए-साए ते एंगा ते केः हेता जाःई लोउए काजिया को ताना –

हे मार! कोसाः कोचा को मेनाः रेदो आमा होन कोड़ा काजियाई में।

पिरितम काजि केदा ने ओड़ाः रेदो गा एयांग आपेयाः लुतुम दो बानोगा। जू हातु तेगे रूड़ा पे।

हारा-माता, पढ़ाव लिखाव ताःई आएयाः होन कोड़ाः मोचा ते ने काजि कोए आईउम केद चि एयांगाः होड़ोमो रे माएवोम गे आंजेद गिड़ि जाना। इमिन रेवो इनियाः जी काए मानातिंग ताना। भला ने लेकान सेंणा होड़ो चि आयाः एंगा के थेरगिड़िया।

मेन्दो कचहरी सेन केया तेः जाँच केदा दो सारते गे। नेया ओते दादा

फिरितमा ते बारी रजिस्टर्ड काना। एयांगाः लुतुम नेरे बानोगा।

नेया लेल केया ते सोबेन कोले आकादंदा गिड़ि जाना। आईञ मेता को ताना दादा-बू ताकिंन नेकान होड़ो किंग मेन्तेकाईंग ठोर लाः। नाः आबुआ चिकान दासा होबावगा? ओकोए आसुल बुआ? एयांग काजि केदा-बिटि रे सिरमा रे सिंह बोंगा लेल तानिः मेनाःईया। इनिः आसुल बुआ। आमाः दादा-बू ताकिंगाः सुकु-रासिका रेगे आईयाः सुकु। दोला नाः दो आबुआः पुरना हातु दिसुम तेबु रूड़ाः।

......आर एयांग सागार आर आईंग हातु होरा ले साब केदा।

तिसिंग एयांग वोः बागे केः लिंगआ। मिद केचाः ओते रे सागारेः सी जादा। एन रे मिद तोआब बाबाईंग रोवा जादा। इकिर बोंगा दाःए तिरपि जादा। ओते एंगा साराए हेर जादा। सिंह बोंगाः उम्बुल रे नाःव बेस गेलिंग आसुल ताना। मुन्गा आड़ाः उतु ओड़ोः सोसो-तिरिल तारोब को जोमनागेन दादा-बू आर आकिनाः बाबू होन सोतोरा मोसा-मोसा को हिजुः बेड़ाः।

=o=o=o=

हिन्दी

7. मां की अमृत वाणी

आंखों में आंसू छलछलाते वह हमें बोल रही थी, बेटी रे बेटा रे अब हम लौट चलें वापस अपना देस। .....और हम सब अपना पुराना गांव वापस लौट आये। हां सच। यह मेरी मां है। इसका भी कभी मां-बाप रहे हैं। इसके भाई-बहन रहे हैं। मामा-भगीना रहे हैं....। जैसा कि अभी मेरे मां-बाप हैं, भाई-बहन हैं, मामा भगीना हैं। यह भी कभी मेरी जैसी कुआरी ही रही थी। गांव के चौराहे पर धूल धूसरित हुए खेली थी। हाट -बाजार गई थी। आंगन-अखाड़ा में नाची-डेगी थी। पली-बढ़ी। शादी-विवाह रचाई। घर-संसार बसाई। आज हम तीन औलादों की मां है यह। दादा पिरितम है। छोटा भाई सागर है। और मैं सुगी। आज हमारा परिवार खूब मजे में चल रहा है। घर में किसी चीज की कमी नहीं है। जगह-जमीन है। दोन-टांड़ है। गाय-बछुर हैं। भेड़-बकरी हैं। ऊपर से पिता जी की नौकरी। महीना खत्म होते न होते पिताजी रूपये के गठरी लाते और मां के हाथ में मुस्कुराते हुए थमाते, लो यह महीना का पगार है, संदुकुची में रख दो। मां भी उन्हें मुस्कुराते हुए ले कर संदुकुची में बंद कर देती। मां ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं होने के बावजूद पिताजी को हिदायत देती, बच्चों की पढ़ाई-लिखाई में हमें कनजूसी बिल्कूल नहीं करना है, समझे? पैसा ही रखे रहोगे तो काम नहीं बनने को है। बुद्धि-ज्ञान नहीं मिलेंगे। हाँ, कुछ पैसे बच्चों के भविष्य के लिये बैंक खाते में जमा कर देंगे।

इतना सुन्दर और मजबूत परिवार है, हमारा। कभी-कभी मां मजाक-मजाक में मुझे डराती, पढ़ा-लिखा दुल्हा नहीं मिला करते। मेरे जैसा नसीबी सब थोड़े ही हैं। अपढ़ हो कर भी भला नौकरी वाला पिता जी जैसा दुल्हा मिला है। देखते नहीं महीना-महीना रूपये ही रूपये पकड़ कर लाता है। भाई पिरितम संत जेवियर कॉलेज राँची में पढ़ता है। होस्टेल में ही रहता है। हम छोटे भाई-बहनों के लिये भी खूब अच्छा है। जब छुट्टी पर आता है तो हम दोनों के लिये पैंट कमीज साड़ी जूते चप्पल साथ में लाता है। वह भी कोई फुटपाती माल नहीं। फिराया लाल, बिग बाजार, विशाल, कोलकाता बाजार ऐसे-ऐसे बड़े-बड़े दुकानों से लाता। पंजाब

स्वीट हाउस से मिठाईयाँ लाता। इसीलिये कभी-कभी पिताजी उसे धमकाता भी था, बेटा अनाप-सनाप पैसा मत खर्च किया करो। हम तो गरीब मुण्डा लोग हैं। साहबों के जैसा रहने से काम नहीं चलने को है। इस पर माँ ताड़ देती है, अच्छा ठीक है उसे गाली मत दिया करो। साहेब लोगों के कॉलेज में पढ़ा रहे हो तो देख-देख कर नहीं सीखता है? हमारा लड़का बन रहा है यही बड़ी बात मानो।

भाई अच्छा से ग्रेजुएशन कर लिया। अब आगे की पढ़ाई के बारे में माता पिताओं के सामने एक समस्या है। मगर उधर विधि का लेखा तो अलग दिखा रहा था। पिताजी का पुराना छाती का दर्द फिर उठने लगा। कभी शान्त होता था। फिर कभी दर्द होने लगता था। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जाती थी वैसे-वैसे दर्द भी अधिक होने लगता था।

एक दिन सब के सामने मां पिता जी को कहने लगी, पता नहीं आगे क्या होगा। तुम कभी ठीक नहीं रहते हो। बड़े लड़के का हमें शादी कर देना चाहिए। तुम्हारा क्या ख्याल है?

दुख से बड़ा कौन होता है? दुविधा में पड़े पिताजी कहने लगे, अच्छा ठीक है। शायद तुम ठीक ही कह रही हो। आज भी खखर के साथ खून निकला था। तुम लोग जैसा सोचते हो वैसा ही करो। बैंक में कुछ रूपये हैं चिंता की कोई बात नहीं। पिताजी की यह दुख भरी बात सुन कर हम सभी सकते में आ गये।

...... और सच में भाई की शादी होने के बरस ही पिता जी का देहान्त हो गया। अब हम सभी बच्चे पिता के अनाथ हो गये। भाई ही पिता के बदले पिता के समान हो गया। मां के रहते हुए भी भाभी मां के बदले मां के समान हो गई।

कुछ साल तक परिवाार अच्छा ही चलता रहा। लेकिन एक विधवा मां बुद्धिमान पढ़े-लिखे बेटे को क्या जवाब देती? एक दिन भाई मां से कहने लगा, मां अपढ़, बोका लोगों के समान गाँव में रहना अच्छा नहीं लगता। यदि पिताजी कुछ रूपये छोड़ गये हैं तो क्यों न हम राँची शहर में जा कर जमीन खरीद कर घर बना लें? मां कहने लगी, ठीक है। कुछ रूपये तुम्हारे पिताजी ने छोड़ रखे हैं। शहर जा कर जमीन-उमीन देख आओ।

तीन साल के अंतराल में हमने राँची शहर में एक सुन्दर बंगला बनाया।

हंसी-खुशी के साथ गाँव से शहर में बस गये। गाँव की सारी जगह जमीन साझा के हिसाब से गांव वालों को ही चास करने दिया गया। गाय-बछुर को मेहमान वालों के घर भेज दिये गये। इसी तरह कुछ साल तक घर में शान्ति से काम धाम चलता रहा। घर में खाना-पकाना, काम-कार्य, हाट-वाट, हम बच्चों की पढ़ाई लिखाई, खरीद-बिक्री सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा। हाँ, घर में मालकिन के हिसाब से मां भाभी को खाना -पकाने, झाड़ु-झांटा, साफ-सफाई आदि के विषय में कभी-कभार बाद-विवाद करती। इसी तरह एक दिन मां और भाभी के बीच काम-कार्य को ले कर विवाद चलने लगा -

सोंदना साग का रस में तो बहुरानी हल्दी नहीं लगाया करते। रोज कहने पर भी तुम्हारे कान में तो पहुँचता ही नहीं। भला अब यह कैसे खाया जायेगा? शादी-विवाह होने के बाद तो खाना-पकाना तो सीखना ही पड़ता है। केवल पढ़ाई-लिखाई भर से घर-वार नहीं चलता।

यह सुनते ही बहू अपने पति के पास जाते हुए तुनक जाती है, अच्छा ठीक है। मेरे पकाया हुआ अच्छा नहीं लगता है तो अलग में पकाओ।

उधर पिरितम भी इन बातों को सुन मां को खरी-खोटी सुनाने लगा। वह कहने लगा, रोज-रोज का किच-किच तो कैसे सहा जा सकता है, मां? बहू का पकाया हुआ खाना पसंद नहीं तो अलग पकाने का इन्तजाम करो। माँ आंचल से आंसू पोंछते हुए कहने लगी, ठीक है। बरांदे का एक कोना हमारे लिये भाग कर दो। हम वहाँ किसी तरह रह लेंगे। इस पर बहू तीरछी नजर से मां को कहने लगी अच्छा ठीक है। घर में कोई कोना यदि है तो आपके बेटे को कहिए।

पिरितम ने तुरंत जवाब दिया है, इस घर में तो तुम लोगों का हिस्सा-बाँटा नहीं है, माँ तुम सब गांव लौट जाओ।

पाल-पोस, पढ़ाया-लिखाया हुआ अपने बेटे के मुंह से ऐसी जल-जला बातें सुन कर मां का खून ही सूख गया। फिर भी वह इस आशा में अभी भी खड़ी है कि भला इतना बुद्धिमान इन्सान अपनी मां के प्रति अन्याय नहीं कर सकता है। पर कचहरी जा कर पता किया तो सच में, यह जमीन केवल भाई के नाम से ही पंजीकृत है। इसमें मां का नाम नहीं है। यह देख हम सभी अचम्बे में पड़ गये। मैंने सभी को

कहा, मुझे नहीं मालूम था भाई-भाभी ऐसे इन्सान भी हो सकती हैं। अभी हमारी क्या दशा होने वाली है? कौन हमें पालेगा गाँव जा कर? माँ ने छाती ठोक कर कहा-ईश्वर हमें देखने वाला है। वही हमें पालेगा। तुम्हारे भाई-भाभी की खुशी में ही मेरी खुशी है। चलो अब हम अपने बपौती गाँव को लौट चलें।

.......और मां, सागर और मैं गांव को लौट आये।

आज़ मां भी हम दोनों को छोड़ चल बसी। जमीन के एक टुकड़े पर सागर हल चलाता है। उस पर मैं एक मुट्ठी धान का बीड़ा रोपती हूँ। इन्द्र देवता उस पर पानी छिड़कता है। धरती माता उस पर खाद देती है। ऊपर वाले की दया से आज भी हम दोनों मजे में पल रहे हैं।

सोंदना साग का रस, भेलवा, क्यूंद खाने कभी-कभार भाई-भाभी और उनके मुन्ना सोतोरा गांव आ जाते हैं।

=o=o=o=

PUBLISHER :-

Jharkhand Jharokha

Shop No. D.G. 03, New building, New Market
Ratu Road, Ranchi (Jharkhand),Pin-834001
Mob. - 09973112040, 09471160792
E-mail : jharkhandjharokha@yahoo.com

मूल्य : 150.00 रू.

ISBN : 978-93-85595-11-0

978-93-85595-11-0